अंक: 27
जनवरी-अप्रैल,
2021

टीएचडीसी

पहल

राजभाषा गृह–पत्रिका

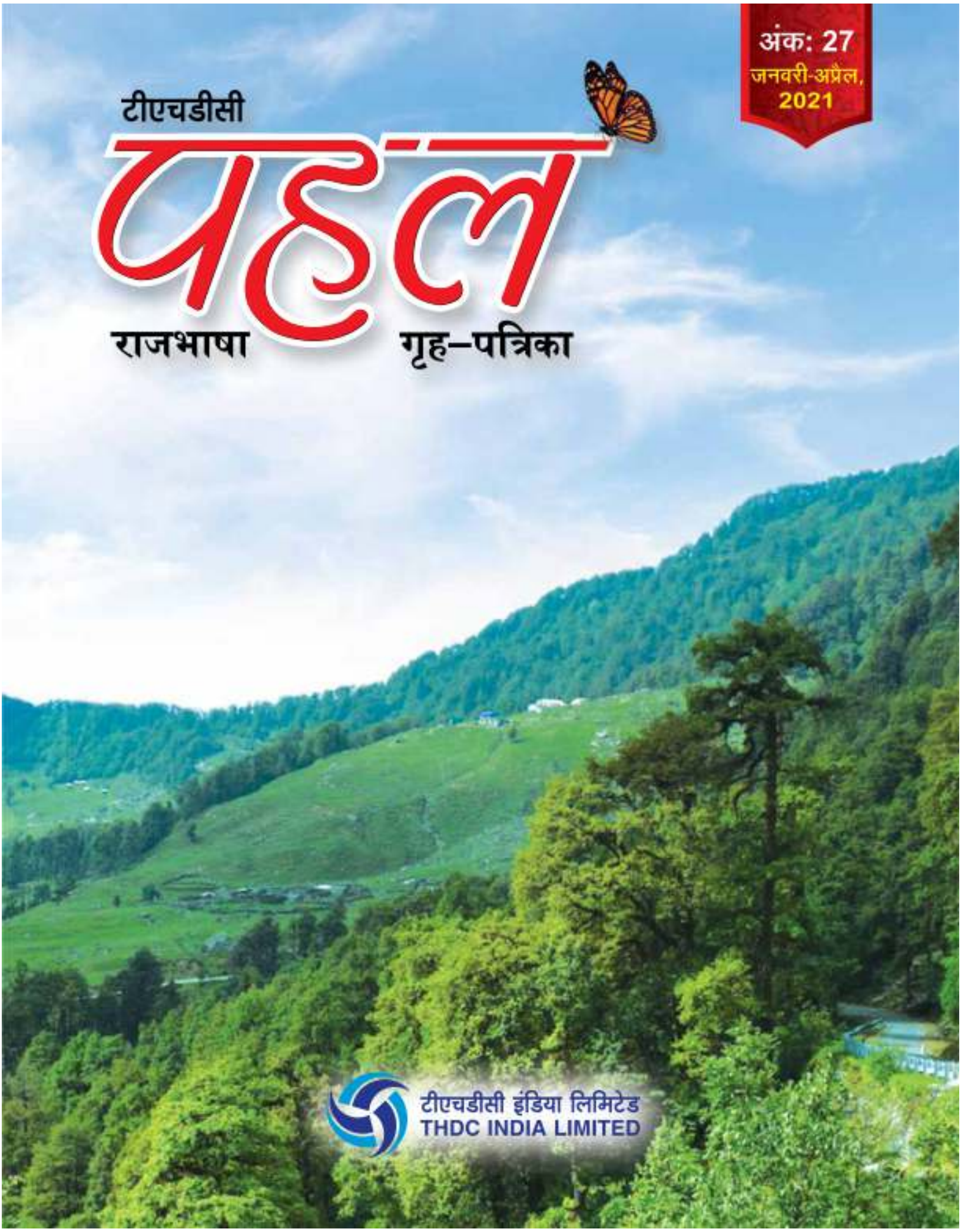

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED

साहित्यकार परिचय

भवानी प्रसाद मिश्र

भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म 29 मार्च, 1913 को गांव टिगरिया, तहसील सिवनी मालवा, जिला होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में हुआ । इनके पिता पं. सीताराम मिश्र शिक्षा विभाग में अधिकारी थे तथा साहित्य प्रेमी थे। भवानी प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा सोहागपुर, होशंगाबाद, नरसिंहपुर और जबलपुर में संपन्न हुई। इन्होने बी.ए. की डिग्री 1935 में जबलपुर से प्राप्त की। हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषा पर उनकी अच्छी पकड़ थी। भवानी प्रसाद मिश्र 1946 से 1950 तक महिलाश्रम, वर्धा में शिक्षक रहे। उन्होंने 1952 से 1955 तक हैदराबाद में 'कल्पना' मासिक पत्रिका का संपादन किया। इसके बाद 1956 से 1958 तक उन्होंने आकाशवाणी में संचालन का कार्य किया। 1958 से 1972 तक मिश्रजी 'गांधी प्रतिष्ठान', 'गांधी स्मारक निधि' और 'सर्व सेवा संघ' से जुड़े रहे। फिर वे मुंबई आ गए जहां उन्होंने आकाशवाणी निर्माता के रूप में कार्य किया तथा दिल्ली आकाशवाणी केन्द्र में भी कार्य किया।

भवानी प्रसाद मिश्र ने 1930 से कविताएं लिखने की शुरुआत की। हाईस्कूल की परीक्षा पास करने से पूर्व उनकी कविताएं 'हिंदू पंच' नामक पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी थी। 1932 में वे माखनलाल चतुर्वेदी के संपर्क में आए और चतुर्वेदी जी आग्रहपूर्वक अपनी पत्रिका 'कर्मवीर' में मिश्र जी की कविताएं प्रकाशित करने लगे। इसके बाद उन्होंने सिनेमा के लिए संवाद भी लिखे तथा उन्होंने मद्रास के एबीएम में संवाद निर्देशन का कार्य किया। भवानी प्रसाद मिश्र आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख कवि माने जाते हैं। वे एक प्रसिद्ध कवि एवं गांधी विचारक थे। गांधी दर्शन का प्रभाव उनकी कविताओं में साफ देखा जा सकता है।

वे 'दूसरा सप्तक' के प्रथम कवि रहे हैं। उनके गीतों ने आधुनिक हिंदी साहित्य को नई दिशा प्रदान की। उनका प्रथम काव्य 'गीत–फरोश' अपनी नई शैली, नई उद्भावनाओं और नवीन पाठ–प्रवाह के कारण अत्यंत लोकप्रिय हुआ। लोग उन्हें प्यार से 'भवानी भाई' कहकर संबोधित किया करते थे। भवानी भाई को 1972 में उनकी काव्यकृति "बुनी हुई रस्सी" पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

निदेशक (कार्मिक) की कलम से

प्रिय साथियों,

राजभाषा गृह पत्रिका "पहल" के 27वें अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव श्री सुमीत जैरथ, आईएएस का 20 जनवरी, 2021 का अर्धशासकीय पत्र प्राप्त हुआ जिसमें उन्होंने राजभाषा हिंदी के सफल कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग के द्वारा बनाई गई 12 "प्र" की रूपरेखा के संदर्भ में जानकारी दी है। इन 12 "प्र" में प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज अर्थात पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रमोशन, प्रतिबद्धता एवं प्रयास शामिल हैं । पत्र में हिंदी के संवर्धन के लिए अंतिम दो "प्र" प्रतिबद्धता और प्रयास पर विशेष बल देने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। मुझे यह कहते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड में उपर्युक्त 12 "प्र" के आधार पर राजभाषा कार्यान्वयन सुनिश्चित करने पर जोर दिया जा रहा है। कंपनी में संवैधानिक प्रावधानों एवं वार्षिक कार्यक्रम के अनुरूप तथा इनसे भी आगे जाते हुए राजभाषा हिंदी के बेहतर कार्यान्वयन के लिए वर्ष भर विभिन्न कार्यक्रम एवं गतिविधियां संचालित की जाती हैं तथा विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत कर्मचारियों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया जाता है।

संगठन के चहुंमुखी विकास के लिए यह आवश्यक है कि कर्मचारियों को प्रत्येक क्षेत्र में सशक्त एवं सक्षम बनाने के लिए मानव संसाधन के विकास पर पर्याप्त बल दिया जाए, जिससे कि संगठन एवं कर्मचारी अपने कार्यलक्ष्यों को बेहतर तरीके से निष्पादित कर सकें। कंपनी अपनी मानव शक्ति को अपनी अमूल्य परिसंपत्ति समझती है तथा कर्मचारियों के लिए उनसे संबंधित विषयों पर मानव संसाधन विकास विभाग के माध्यम से प्रशिक्षण के अवसर उपलब्ध कराती है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दौरान इस बात पर विशेष जोर दिया जाता है कि कार्यक्रमों में अधिकांश वार्तालाप हिंदी में हो, क्योंकि हिंदी में किए जाने वाले वार्तालाप में कर्मचारी स्वयं को सहज महसूस करते हैं। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अतिरिक्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियम एवं नियमों के बारे में जानकारी दी जाती है तथा यूनिकोड प्रणाली के माध्यम से टाइप करने की अनेक सुविधाओं, हिंदी में नोटिंग–ड्राफ्टिंग करने, सरल हिंदी के प्रयोग एवं अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप निगम में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में आशानुरूप वृद्धि हुई है।

21 जनवरी, 2021 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 31वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन ऑनलाइन किया गया जिसमें समिति के 42 संस्थानों के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया । इस बैठक में नराकास वैजयंती योजना के अंतर्गत टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय को वर्ष 2019–20 के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके लिए कारपोरेट कार्यालय के सभी कर्मचारी बधाई के पात्र हैं । मुझे आशा है कि कंपनी के कर्मचारी राजभाषा हिंदी के प्रति अपने समर्पित प्रयास जारी रखते हुए निगम को प्रगति पथ पर अग्रसर करने में अपना योगदान देना जारी रखेंगे, यही हमारी सच्ची राष्ट्र सेवा होगी।

आइए! हम सब मिलकर हिंदी की उत्तरोत्तर विकास यात्रा में सम्मिलित होकर राजभाषा हिंदी के माध्यम से नए आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहयोग दें।

धन्यवाद !

विजय गोयल
निदेशक(कार्मिक)

संपादकीय

हिंदी गृह पत्रिका "पहल" का 27वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

जनवरी से जून, 2011 की अवधि के प्रथम अंक के साथ इस पत्रिका के प्रकाशन की शुरूआत हुई थी। दिसंबर, 2020 में प्रकाशित किए गए पिछले अंक के साथ यह पत्रिका अपने 10 वर्ष पूरे कर चुकी है। इस अवसर पर मैं यह कहना चाहता हूं कि यह टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के शीर्ष प्रबंधन की राजभाषा हिंदी के प्रति प्रबल इच्छा शक्ति का द्योतक ही है कि पिछले 10 वर्षों से यह पत्रिका अनवरत रूप से प्रकाशित की जा रही है। इसके लिए मैं उन सभी शीर्ष अधिकारियों का आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना अमूल्य योगदान देना जारी रखा है। इन 10 वर्षों में जिन अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने इस पत्रिका को अपनी लेखनी के माध्यम से सजाने व सवारने का प्रयास किया, मैं उनका भी तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूं और धन्यवाद देता हूं। मैं प्रिंटिंग प्रेस के उन सभी प्रतिनिधियों को भी धन्यवाद देता हूं जिन्होंने इस पत्रिका की साज सज्जा में मेहनत एवं लगन से कार्य किया है।

राजभाषा हिंदी को समर्पित इस पत्रिका ने निगम के अधिकारियों व कर्मचारियों को अभिव्यक्ति का एक सशक्त मंच प्रदान किया है और यह हर बार नए कलेवर एवं साज सज्जा के साथ प्रकाशित की जा रही है। इसमें न केवल निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से प्राप्त लेखों एवं रचनाओं को प्रकाशित किया जा रहा है अपितु इसमें विविधतायुक्त ज्ञानवर्धक सामग्री का समावेश करने का प्रयास भी रहता है। इन सबके साथ यह भी प्रयास रहता है कि इसमें राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा राजभाषा हिंदी के लिए किए जा रहे विभिन्न अनुसंधानों के बारे में भी जानकारी दी जा सके जिससे पाठक उनका लाभ उठाकर राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के सहयोगी बन सकें। इस पत्रिका में प्रत्येक वर्ष प्रकाशित किए गए 05 सर्वश्रेष्ठ लेखों को हिंदी दिवस/पखवाड़ा/माह के दौरान पुरस्कृत किया जाता है। इस प्रोत्साहन से ऐसे स्तरीय लेख प्राप्त हो रहे हैं जो कि पेशेवर पत्रिकाओं में भी देखने को नहीं मिलते ।

राजभाषा हिंदी के प्रति निगम में कर्मचारियों के मध्य उत्साह का वातावरण सृजित हो रहा है । अधिकांश अधिकारीगण उत्साह के साथ ई–टूल्स का प्रयोग कर हिंदी में कार्य कर रहे हैं। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि हिंदी टाइपिंग अब कम्प्यूटर पर गेम खेलने जैसी हो गई है। कोविड–19 महामारी के कारण पिछले एक वर्ष से पूरा विश्व कार्य करने की नई संभावनाओं की तलाश कर रहा है। ऐसी परिस्थितियों में भी राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में कोई कमी नहीं आई है और राजभाषा की बैठकें, कार्यशालाएं, प्रतियोगिताएं आदि ऑनलाइन माध्यमों का प्रयोग करते हुए सफलतापूर्वक संपन्न हो रही हैं तथा यह भी जोड़ना महत्वपूर्ण है कि ऑनलाइन आयोजित किए जा रहे इन कार्यक्रमों में प्रतिभागिता में भी वृद्धि दर्ज की जा रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा अनेक ई–टूल्स सुदृढ़ करने का कार्य किया जा रहा है। वोकल फॉर लोकल के अंतर्गत किए जा रहे कार्यों में राजभाषा विभाग द्वारा निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल "कंठस्थ" का विस्तार किया जा रहा है जिससे अनुवाद में समय की बचत करने के साथ–साथ एकरूपता एवं उत्कृष्टता लाई जा सकेगी । विभाग द्वारा ई–प्रशिक्षण की शुरूआत की गई है जिसमें परंपरागत कक्षा आधारित प्रशिक्षण की पद्धति के स्थान पर ऑनलाइन वेब कांफ्रेंसिंग टूल के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जा रहा है। राजभाषा विभाग द्वारा की जा रही इन पहलों से हिंदी का स्वर्णिम भविष्य दृष्टिगोचर हो रहा है।

अंत में मेरी यही कामना है कि यह पत्रिका आप सभी के सहयोग से इसी प्रकार निरंतर प्रकाशित होती रहे और टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड अपने प्रमुख कार्य के साथ राजभाषा हिंदी का परचम भी लहराती रहे ।

धन्यवाद!

पंकज

पंकज कुमार शर्मा
वरि. हिंदी अधिकारी

कर्म, ज्ञान और भक्ति का संगम ही जीवन का तीर्थ राज है – **दीनानाथ दिनेश**

पहल

हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
की राजभाषा गृह पत्रिका (अंक–27)

मुख्य संरक्षक
श्री डी.वी.सिंह
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक
श्री विजय गोयल
निदेशक(कार्मिक)

मार्गदर्शक
श्री वीर सिंह
महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन)
श्री ईश्वर दत्त तिग्गा
उप महाप्रबंधक (कार्मिक–स्थापना / हिंदी)

संपादक
पंकज कुमार शर्मा
वरि. हिंदी अधिकारी

संपादन सहयोग
नरेश सिंह
कनि. अधिकारी (हिंदी)
मंजु तिवारी
उप अधिकारी (कार्यालय प्रशासन)

संपर्क सूत्र
संपादक
"पहल"
हिंदी अनुभाग, मुख्यालय
टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
भागीरथी भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड,
ऋषिकेश–249201, उत्तराखंड
दूरभाष : 0135–2473614
ई–मेल: pankajksharma@thdc.co.in
thdchindi@gmail.com

पहल पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार उनके अपने हैं। इनसे टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड प्रबंधन का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

विषय सूची

	लेख / तकनीकी लेख / प्रेरक प्रसंग	पृष्ठ सं.
1	चमोली जल प्रलय एवं बांध	4
2	रोशनी	7
3	व्यंग्य–मैं तो बेटे को नेता बनाऊंगा	9
4	हास्य–सोनपापड़ी	10
5	व्यंग्य–लेखक और लॉकडाउन	11
6	ब्रह्मा जी की आयु कितनी है?	12
7	योगश्च चित्त–वृत्ति निरोधः	14
8	मैं और मेरी आदत	16
9	हास्य–भारत की सड़कें	17
10	कलम सूत्र	18
11	पूज्यवर हनुमान प्रसाद पोद्दार जी	20
12	स्वास्थ्य परिचर्चा–ध्यान	22
13	कोरोना से बचाव	23
14	यूनिकोड एक मात्र विकल्प–दूसरा भाग	24
15	वार्षिक कार्यक्रम–2021–22	26
	कविताएं	
16.	हिंदी अपनाएं / मेरी मां	28
17.	हे मर्यादा पुरूषोत्तम राम	29
18.	चुनौती महामारी की / पॉलीथीन	30
19.	कोरोनाकाल / बेटी	31
20.	पत्थर / एक कंजूस पति / दफ्तर का बाबू	32
21.	ईमान / कोरोनावायरस का कोहराम	33
	राजभाषा गतिविधियां एवं कार्यक्रम	
22.	हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन	34
23.	कारपोरेट स्तरीय नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता	37
24.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक	37
25.	नराकास हरिद्वार की बैठक में कारपोरेट कार्यालय को नराकास राजभाषा वैजयंती का प्रथम पुरस्कार	38
26.	नराकास टिहरी की अर्धवार्षिक बैठक संपन्न	39
27.	संपादक के नाम पाती	40
28.	हास–परिहास	41

लेख

चमोली जल प्रलय एवं बाँध

–हरीश चंद्र उपाध्याय
वरिष्ठ प्रबंधक (भू–विज्ञान एवं भू–तकनीकी)

देवभूमि उत्तराखंड के गढ़वाल में चमोली जिला स्थित है जिसका मुख्यालय गोपेश्वर में है। जोशीमठ से एक सड़क बद्रीनाथ की तरफ तथा दूसरी सड़क तपोवन की तरफ जाती है। तपोवन में एनटीपीसी द्वारा 520 मेगावाट की "तपोवन विष्णुगाड नदी परियोजना" का धौलीगंगा नदी पर निर्माण किया जा रहा है। इससे ऊपर की तरफ निजी कंपनी की 13 मेगावाट की ऋषिगंगा पन बिजली परियोजना धौली गंगा की सहायक (Tributory) ऋषिगंगा नदी पर स्थित है। प्रकृति में समय–समय पर कुछ न कुछ घटनाएं होती रहती हैं। 06 फरवरी की रात को ग्लेशियर वाली चट्टान नीचे खिसक गई और उसके साथ ग्लेशियर का अधिकांश हिस्सा भी नीचे आ गया। इससे ऋषिगंगा परियोजना पूर्ण रूप से तहस–नहस हो गई और एनटीपीसी की परियोजना को भी काफी नुकसान उठाना पड़ा। जब यह घटना हुई तब पूरे उत्तराखंड में धूप खिली हुई थी।

भौगोलिक स्थिति: नंदादेवी राष्ट्रीय उद्यान 630 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है और फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान के साथ मिलकर नंदादेवी बायोसफियर रिजर्व बनता है जिसका कुल क्षेत्रफल 2236.75 वर्ग किलोमीटर है और इसके चारों ओर 5148.00 वर्ग किलोमीटर का मध्यवर्ती क्षेत्र (बफर ज़ोन) है। इस नेशनल पार्क को 1988 में यूनेस्को द्वारा प्राकृतिक महत्व की विश्व धरोहर का सम्मान भी दिया जा चुका है। हाई–ग्रेड मेटामोर्फिक रॉक, लो–ग्रेड मेटामोर्फिक रॉक तथा वाल्कैनिक रॉक की अधिकता जैसे क्वारटाइज (Quartize), मार्बल (Marble), डोलोमाइट (dolomite), स्लैट (Slat) सिस्ट (Sist), माइका (Mica), नाइट (Kynite) जैसे खनिज (Mineral) उपलब्ध हैं। नंदादेवी भारत में दूसरा तथा विश्व में 23वां सबसे ऊँचा पर्वत है जिसकी ऊंचाई 7816 मीटर है इसके पूरब में गौरीगंगा घाटी तथा पश्चिम में ऋषिगंगा घाटी और इसके दोनों ओर ग्लेशियर हैं जो पूरे साल बर्फ से ढ़के रहते हैं। ऋषिगंगा में सबसे पहले इसका जल प्रवाहित होने के बाद वह धौलीगंगा नदी में मिलता है। ऋषिगंगा रैनी गाँव के आस–पास धौलीगंगा में मिलती है। रविवार 07 फरवरी को नंदादेवी ग्लेशियर तथा चट्टान का एक हिस्सा टूटने से तबाही का मंजर सामने आया। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) के अनुसार भारत के कुल स्थलीय क्षेत्र का लगभग 12.6% भूस्खलन–प्रवण संकट ग्रस्त क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

ग्लेशियर एवं चट्टान गिरने का कारण: शिव पुराण के अनुसार नाद (ध्वनि) और बिंदु (प्रकाश) के मिलन से ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई। 14 अरब साल पहले ईश्वर द्वारा ब्रह्मांड की रचना बहुत ही सोच समझकर की गई। धरती पर ऋतु परिवर्तन एवं समय परिवर्तन (जलवायु परिवर्तन) से तापमान में प्रभाव पड़ता है एवं हवा का दबाव कम तथा ज्यादा होता रहता है जिस कारण कुछ न कुछ घटनाएं होती रहती हैं। ग्लेशियर का निर्माण सालों तक भारी मात्रा में बर्फ जमा होने और उसके एक जगह एकत्र होने से होता है। ग्लेशियर टूटना एक प्राकृतिक घटना है। यह तब टूटते हैं, जब किसी भू–वैज्ञानिक हलचल जैसे गुरुत्वाकर्षण, प्लेटों के नजदीक आने या दूर जाने की वजह से पृथ्वी के नीचे हलचल होती है। इसके अलावा जैसे चट्टानों का खिसकना, स्लाइड हो जाना, बड़े बोल्डर गिरना आदि घटनाएं भी होती रहती हैं।

ऋषिगंगा के बाएं छोर पर रौंथी गदेरा मिलता है जो रौंथी पर्वत से आता है और इसका श्रोत रौंथी ग्लेशियर ही है। इस पर्वत पर 5600 मीटर ऊंचाई पर करीब 0.50 किलोमीटर लंबा हैंगिंग ग्लेशियर जो एक चट्टान पर स्थित था। 06 फरवरी की रात को हैंगिंग ग्लेशियर वाली चट्टान नीचे खिसक गई और उसके साथ ग्लेशियर का अधिकांश हिस्सा भी नीचे आ गिरा। रौंथी गदेरे से भारी मात्रा में मलबा लेकर यह ग्लेशियर व बोल्डर करीब 10 किलोमीटर की दूरी तय कर ऋषि गंगा (3800 मीटर की ऊँचाई) नदी में जा गिरे। यहां पर बर्फ, मलबा एवं बोल्डर जमा हो गए और एक कृत्रिम झील का निर्माण हो गया। 07 फरवरी की सुबह भारी दबाव के चलते

तपस्या धर्म का पहला और आखिरी कदम है – महात्मा गांधी

तबाही से पहले

तबाही के बाद

जिस जगह से ग्लेशियर एवं पर्वत का टुकड़ा गिरा

यह कृत्रिम झील टूट गई और मलबे सहित नीचे क्षेत्रों में बढ़ गई। 07 फरवरी की सुबह 10 बजे के आस–पास इससे ऋषि गंगा परियोजना पूर्ण रूप से तहस–नहस हो गई और एनटीपीसी की परियोजना को भी लगभग 1800 करोड़ रु. का नुकसान उठाना पड़ा। इस आपदा में एक पुल बह गया जिससे 13 गाँव (Village) के लोग पूरी तरह अलग–थलग पड़ गए। गाँव के अन्य इलाकों को भी जानमाल की काफी क्षति हुई। इससे कुछ नुकसान टीएचडीसी के पीपलकोटी परियोजना के बाँध के कार्य पर भी हुआ। सामान्यतया चट्टान खिसकने, स्लोप फैल्यर (Slope Failure), स्लाइड आदि की घटनाएं मुख्यतः निम्नलिखित कारणों से भी हो सकती हैं :–

- रॉकफॉल (Rock Fall), टॉपल (Topple), अर्थ स्लम्प (Earth Slump) एवं Translational स्लाईड भी होती रहती है।
- गुरुत्वाकर्षण (Gravitational Force), पानी अपक्षय (weathering) और रासायनिक प्रभाव (Chemical effect) के कारण चट्टान खिसकने या स्लाइडिंग होने की घटनाएं होती हैं।

यह कृत्रिम झील ऋषि गंगा की सहायक नदी पर बनी हुई है जिसके समाधान हेतु सरकार के उच्चस्तर पर विचार किया जा रहा है । इससे अधिक खतरे की कोई बात नहीं है।

तबाही (Flood) में बांध की भूमिका: सभी लोगों की यह धारणा रहती है कि बाँध से तबाही होती है परंतु अधिकांश परिस्थिति में बांध के होने से यह बाढ़ (Flood) के अधिकांश पानी को रोककर निचले इलाकों में तबाही होने का खतरा कम कर देते हैं।

उत्तराखंड में बाढ़ (Flood) के समय टिहरी बांध की भूमिका: उत्तराखंड में जबसे टिहरी बाँध का निर्माण हुआ है तबसे बाढ़ के समय इस बांध ने तबाही से बचाव में पूरा योगदान दिया है। जैसे 2010 तथा 2013 में भी बाढ़ (Flood) के समय टिहरी बाँध ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इस दौरान दो दिन में 25 मीटर पानी को जलाशय में रोककर निचले इलाके में तबाही होने से बचाया था। 07 फरवरी, 2021 को भी जब यह पता चला कि तपोवन के पास यह घटना घटित हो गयी तो सुरक्षा के पूर्वोपाय के रूप में टिहरी बांध के गेट बंद कर दिए गए तथा बिजली उत्पादन को रोक दिया गया। जिससे भागीरथी नदी से गंगा में आने वाले पानी की मात्रा कम हो गई और यदि अलकनंदा में अधिक पानी आता तो भी निचले इलाके (हरिद्वार ,ऋषिकेश व मैदानी क्षेत्रों) में आने वाला पानी नियंत्रण में आ जाता है। बाँध बनाने से इलाके का, प्रदेश का एवं देश का विकास होता है। इसका जलाशय वृहत होने के कारण पानी की मात्रा समाने की क्षमता बहुत अधिक है।

एनटीपीसी बैराज ने भी इस जल प्रलय के अधिकांश वेग को नियंत्रित किया तथा विष्णुगाड के निचले इलाके में होने वाले नुकसान को कम किया।

रही बात नुकसान की तो क्या जब राकेट, जेट, पनडुब्बी, हवाई जहाज, फेरि, ट्रेन, मेट्रो, बस, पानी का जहाज, अन्य मोटर वाहन दुर्घटनाग्रस्त होते हैं तो जान–माल का नुकसान तो तब भी होता है। इसका मतलब यह नहीं कि इनका निर्माण ही बंद कर दिया जाए। किसी कारखाने, स्कूल, कॉलेज, मॉल, दुकान, कार्यालय आदि में आग लगती है तो काफी नुकसान होता है तो क्या इनको बनाना या उस जगह जाना बंद कर देना चाहिए?

टूटे हुए पुल का दृश्य जिससे 13 गांव के लोग पूरी तरह अलग–थलग हो गए

कृत्रिम झील जो आज भी बनी हुई है

किसी भी फ्लाई ओवर, पुल या रस्सा मार्ग टूटने से काफी नुकसान होता है तो क्या इन्हें बनाना बंद कर देना चाहिए? हम घर बनाते है तो कभी टूट जाता है और हादसा हो जाता है तो क्या लोग घर बनाना बंद कर दें? किसी भी काम को करते समय जरूरत है तो सावधानी की है और अगर ध्यान रखना है तो सुरक्षा पहलू (सैफ्टी फैक्टर) का रखना है। जल विद्युत परियोजनाएं तो सालों साल चलती रहती हैं इससे किसी प्रकार का प्रदूषण भी नहीं होता है। जरा सोचिए !

यहाँ यह बात इसलिए लिखी जा रही है कि समय–समय पर बड़े–बड़े स्वयंभू बुद्धिजीवी बाँध बनाने का विरोध करते हैं जिससे जनता में गलत संदेश जाता है। अतः यह बात कोई भी अपने मन में न लाए कि बाँध से किसी प्रकार का नुकसान होता है। यह परियोजना तो बहुउद्देशीय है इससे बाढ़ को तो नियंत्रण में कर ही सकते है इसके साथ ही विभिन्न प्रकार के वाटर गेम, मछली पालन, रोजगार, मैदानी क्षेत्रों में पानी की आपूर्ति, बिजली उत्पादन आदि भी कर सकते हैं।

सावधानियाँ (Safety Factor): बाँध से ऊपरी इलाके में जितने भी ग्लेशियर या पर्वत है उन सबमें सेन्सर लगे होने चाहिए। आजकल ऐसे पर्याप्त उपकरण उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से उस जगह पर हो रही हलचल का पता लगाया जा सकता है। साथ ही हम इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से एप डाउनलोड करके भी पता लगा सकते हैं। बाँध के कार्यों में Insrumentation Department को अलर्ट रहना चाहिए और समय–समय पर रीडिंग लेना, सर्विस करना, डाटा लेना इन सब बातों का ध्यान रखना चाहिए। प्रत्येक परियोजना में आपदा प्रबंधन की भी विशेष भूमिका रहती है अतः समय–समय पर डाटा एकत्रित करते रहना चाहिए। Enclinometer, Piezometer, Crack meter, Stress meter, Bus Multiplexer, Web data monitoring service आदि का प्रयोग किया जा सकता है। अब तो किसी भी खतरे की सूचना सेटेलाइट के माध्यम से भी दी जा सकती है जिससे आसपास के लोग और संबंधित अधिकारी सचेत हो जाएं। बाँध के जलागम क्षेत्र (Catchment area) का समय–समय पर उपचार होते रहना चाहिए। बाँध के जलाशय की नियमित साफ सफाई, ऊपर की तरफ चैक डैम बनाना तथा सॉयल इरोशन (Soil Erosion) का उपचार भी होते रहना चाहिए।

चमोली के ऋषि गंगा के पास या तपोवन के पास जो भी घटना हुई बहुत ही दुखदायी हुई। टीएचडीसी परिवार की संवेदना सभी प्रभावित लोगों के साथ है। सरकार तथा संबंधित विभाग अपने–अपने स्तर से सहायता का पूरा प्रयास कर रहे हैं। सैफ्टी फैक्टर और सावधानी से ही सुरक्षा होती है। प्राकृतिक आपदा होती रहती है हमको घबराना नहीं चाहिए अपितु साथ मिलकर सामना करना चाहिए।

सरकार को निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देने की अत्यंत आवश्यकता है:–

- संबंधित विभाग, राज्य सरकारों और स्थानीय समुदायों के परामर्श क्षेत्रों की पहचान और प्राथमिक निर्धारण के बाद सूक्ष्म और वृहत स्तर पर भूस्खलन खतरे की क्षेत्रीय मैपिंग करना।
- देश को प्रभावित करने वाली भूस्खलन घटनाओं से संबंधित सूची तैयार करना और उसका निरंतर अध्ययन करना।
- भूस्खलन शोध, अध्ययन और प्रबंधन के लिए एक स्वायत्तशासी केंद्र की स्थापना करना। भूस्खलन संबंधी शिक्षा एवं पेशेवरों के प्रशिक्षण को बढ़ावा देना।

सत्याग्रह बल से नहीं, हिंसा के त्याग से होता है – **महात्मा गांधी**

मार्मिक

रोशनी

–शीला चौहान
उप अधिकारी(संविदा), ऋषिकेश

अभी एक साल पहले ही एक बीमारी के दौरान, दवाई के रिएक्शन की वजह से स्वाति की आंखों की रोशनी चली गई। अचानक ही जिंदगी ठहर गई। उसकी दुनिया, उसकी हिम्मत सब कुछ अंधेरे में डूब गया।

अपनी सफेद छड़ी के सहारे स्वाति बस में धीरे–धीरे चलती हुई, कंडक्टर की बताई सीट पर पहुंची। बैठने के बाद, अपनी छड़ी को उसने साइड में टिकाया और पर्स को गोद में रखकर बैठ गई। सभी यात्रियों की सहानुभूति से भरी नजरें उसी पर टिकी थीं। वे जानते थे स्वाति को, उसकी व्यथा को। पहले भी तो इसी बस से ऑफिस जाती रही थी। तब वह ठीक थी। जीवन प्रश्नों का जंगल बन गया। मेरे ही साथ क्यों ऐसा हुआ? मैं क्यों? उसकी हताशा कभी गुस्से, तो कभी गहरी बेबसी के रूप में सामने आती।

कुछ ही दिनों पहले बेहद स्वतंत्र और आत्मनिर्भर रही स्वाति को हालात के घुमाव ने पूरी तरह से निर्भर और शक्तिहीन बना दिया। बात–बात पर उसका मन उबल पड़ता। लेकिन गुस्सा कर भी ले, तो कुछ बदलने वाला तो नहीं था। यही बेबसी उसको और भी ज्यादा खाए जाती थी– मैं कुछ नहीं कर पाऊंगी, मेरी जिंदगी की अब क्या मंजिल हो सकती थी, मेरे अरमानों का क्या मोल...? हर कदम के लिए, हर एक दिन बिताने के लिए उसे काफी दिमागी और शारीरिक मशक्कत करनी पड़ती। उसे ऐसी हालत में देखकर, सबसे ज्यादा तकलीफ पाता उसका पति, मानव। वायुसेना में पायलट मानव रोज, हर पल अपनी पत्नी को अंधेरे से घिरा हुआ पाकर, अंदर ही अंदर घुटता रहता था, लेकिन यह उसने तय कर लिया था कि स्वाति को उसकी जीवंतता लौटानी है। अपनी फौजी पृष्ठभूमि के कारण, मुश्किल परिस्थितियों से लड़ना उसे आता था। हारना उसकी किताब में नहीं था। स्वाति की हालत देखकर उसने यह जान लिया कि उसका नौकरी पर लौटना जरूरी है। दफ्तर में बात करके सब कुछ सुनिश्चित कर लिया, लेकिन स्वाति को मनाना आसान नहीं था। वह अकेले कहीं भी जाने से डरने लगी थी। दफ्तर जाने के नाम से ही उसने पूछ लिया– मैं बस में कैसे जाऊंगी? क्या मुझे अकेले भेज दोगे? अपनी पत्नी को इस तरह अकेले भेज देने के पक्ष में मानव भी नहीं था, लेकिन दफ्तर और उसकी व्यस्तताएं, स्वतंत्र जीवन जी पाने का साहस ही स्वाति का आत्मविश्वास और उमंग लौटा सकते थे, ये भी तय था। इसलिए मानव ने फैसला किया कि वह अपनी पत्नी को रोज खुद दफ्तर छोड़ने जाएगा। हालांकि दोनों के दफ्तर शहर के विपरीत कोनों पर थे, लेकिन मानव ने हार नहीं मानी। स्वाति इस ख्याल से ही राहत महसूस करने लगी कि मानव उसके साथ जाएगा।

मानव को जल्दी ही अहसास हो गया कि यह व्यवस्था लंबे समय तक नहीं चल पाएगी। एक तो यह काफी दौड़–भाग भरा काम था, दूसरे ये तरीका महंगा भी बहुत पड़ रहा था। उसने ठान लिया–स्वाति को अकेले जाने की आदत डालनी होगी। पर स्वाति से कैसे कहे? वह तो अब भी संभल नहीं पाई, लेकिन कोई चारा नहीं था, सो बहुत संभलकर कह दिया। स्वाति ने कसैले स्वर में प्रतिक्रिया दी– मैं अंधी हूं, कैसे जानूंगी कि कहां जा रही हूं? तुमने मुझे छोड़ने का फैसला कर लिया है क्या?

मानव का दिल रो उठा। कैसे समझाए पत्नी को कि सब कुछ उसके भले के लिए है। उसने स्वाति से वादा किया कि वह बस में उसके साथ जाएगा ताकि स्वाति को परेशानी न आए। इसी के साथ उसकी आदत भी पड़ जाएगी। दो हफ्तों तक लगातार, पायलट की पूरी वर्दी धारण करके, मानव स्वाति के साथ बस में

उसके साथ ऑफिस तक जाता रहा और वहां से अपने ऑफिस के लिए दूसरी बस लेता। शाम को फिर स्वाति के दफ्तर पहुंचकर उसे घर लेकर आता। उसने स्वाति को सिखाया कि कैसे आवाज के सहारे चीजों को समझे, कैसे अपने नए वातावरण, अपनी नई जिंदगी में जिये? बस में कैसे चढ़ना–उतरना, टिकट लेना, रोज के आने–जाने वालों से बातचीत और सीट मिलने में सुविधा, हर काम को स्वाति के लिए सुलभ बना दिया मानव ने। हालांकि, ये व्यवस्था पहले से ज्यादा मुश्किल और थकाने वाली थी, लेकिन मानव जानता था कि कुछ समय की बात है। जिस स्वाति को वह जानता है, वह चुनौतियों से घबराने वाली लड़की नहीं है। बस, हालात की शिकार बनकर, अपना हौसला खो बैठी है।

पत्नी को आत्मविश्वास के दामन तक पहुंचाने के लिए मानव ने सब्र और स्नेह का हाथ फैलाया। आजमाइश का दौर खत्म हुआ। आखिर वह सोमवार आ गया जब स्वाति को अकेले जाना था। उसने मानव के गले में बांहें डाल दी, आंखों में आंसू थे। अपने पति की वफा, धैर्य और प्यार की कायल हो चुकी थी। उसकी जुबान शुक्रिया कहते हुए लड़खड़ा रही थी। पहली बार आज वे अलग–अलग दिशाओं में जाने वाले थे।

सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार.....हर दिन आराम से बीत रहा था। स्वाति को कोई मुश्किल नहीं हुई। वह खुश है कि अब अपने काम खुद कर सकती है। शुक्रवार की सुबह वह बस से उतर ही रही थी कि कंडक्टर ने कहा–मुझे आपसे ईर्ष्या होती है। स्वाति हैरान रह गई–एक नेत्रहीन से ईर्ष्या ? क्यों ? कंडक्टर ने कहा–कितना अच्छा लगता है जब कोई आपका इतना ख्याल रखता है, हर वक्त साथ होता है। स्वाति समझ नहीं पाई कंडक्टर क्या कहना चाह रहा है। उसने आश्चर्य से पूछा–क्या मतलब है आपका?

कंडक्टर ने कहा– आपको पता है, हर रोज, एक सजीला फौजी, एक कोने में खड़ा होकर आपको देखता रहता है। जब आप सुरक्षित ऑफिस के अंदर दाखिल हो जाती हैं, तो प्यार–भरी निगाह से, आपकी रोज की जीत पर एक छोटा–सा सैल्यूट देकर, अपने रास्ते चला जाता है। आप सचमुच किस्मत वाली हैं। स्वाति की आंखों से खुशी के आंसू बह निकले। मानव ने उसे ऐसा तोहफा दिया था जो उसकी आंखों की रोशनी से भी ज्यादा ताकतवर था–प्यार का तोहफा, जो उसकी अंधेरी जिंदगी में रोशनी का पैगाम लाया था।

कवर पृष्ठ फोटोग्राफ:–
डॉ. मनोज रांगड, प्रबंधक, सामाजिक एवं पर्यावरण, पीपलकोटी

भाग्य में नहीं, अपनी शक्ति में विश्वास रखो – डॉ. बी.आर.अंबेडकर

व्यंग्य

मैं तो बेटे को नेता बनाऊंगा

–आशुतोष कुमार आनंद
प्रबंधक (कार्मिक–नीति), ऋषिकेश

कबीरा जब हम पैदा हुए जग हंसे हम रोए
ऐसी करनी कर चलो हम हंसे जग रोए

यह दोहा कबीरदास जी का महज़ दो पंक्तियों का जरुर है पर बहुत गहरा अर्थ है इसका। जब किसी का जन्म होता है बड़ी खुशियाँ मनाई जाती हैं, अमीर हो या गरीब अपने हैसियत से बच्चे के जन्म की खुशी मनाते हैं। जैसे–जैसे बच्चा बड़ा होता है तो माता–पिता के मन में बरबस एक ख्याल आता है कि बड़ा होकर क्या बनेगा?

बॉलीवुड के एक मशहूर गाने की याद आती है:

पापा कहते हैं बेटा हमारा, बड़ा नाम करेगा, कोई बिज़नस में अपना नाम करेगा, इंजीनियर या डॉक्टर का काम करेगा। पर अभी तक शायद ही कोई माता–पिता होंगे जिन्होंने यह कहा हो या सोचते हों कि बच्चा बड़ा होकर नेता बनेगा, बड़ी अजीब विडम्बना है कि सबसे पावरफुल प्रोफेशन होने के बावजूद भी कोई इसकी कामना नहीं करता और न ही इसकी तैयारी करता है।

सच्चाई यह है कि आप चाहे कितने भी बडे प्रशासनिक अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर, मैनेजर बन जाएं पर नेता सबसे ऊपर है। साहब ये देश चलाते हैं, डॉक्टर, इंजीनियर प्रशासनिक अधिकारी इनके आदेशों के गुलाम हैं। इसके लिए कोई न्यूनतम और न ही अधिकतम आयु, शिक्षा इत्यादि की जरुरत है, कोई परीक्षा नहीं, कोई टेस्ट नहीं, बस कुछ खास गुण होने चाहिए और दुनिया आपके कदमों में होगी।

नौकरी में एक छोटी सी गलती और फिर लेने के देने पड़ जाते हैं पर यहाँ गलतियों को करने से आप महान बनते हैं। आपको विख्यात होने के लिए पहले कुख्यात बनना पड़ता है। बंगला, गाड़ी, पेंशन, सिक्योरिटी गार्ड, सुख सुविधाएं सब वर्ल्ड क्लास। जब नेताओं का काफिला निकलता है तो उनके लिए रास्ते खाली हो जाते हैं।

जिन्दगी में कभी किसी चीज़ के लिए लाइन में नहीं लगना पड़ता। एक घर में नेता हो जाये तो बाकी आने वाली पीढ़ी वैसे ही गंगा नहा लेती हैं।

इस प्रोफेशन में करियर बनाने वाले लोग कानून, पुलिस, कोर्ट, कचहरी सबसे ऊपर होते हैं, इतना मान, मर्यादा, इज्ज़त, पैसा किसी प्रोफेशन में नहीं, इस प्रोफेशन में न ही इनकम की कोई अधिकतम सीमा, न ही रिटायरमेंट की कोई अधिकतम उम्र की सीमा, बस यह कोशिश करनी होती है कि सिर्फ सत्ता पक्ष के साथ बने रहें तो कोई दिक्कत या परेशानी नहीं होती। हर काम में सहूलियत, सारी व्यवस्थाएं, बस आपके आदेश के गुलाम। कहने के लिए तो यह प्रोफेशन नहीं, जन–प्रतिनिधि कहलाते हैं पर बस एक बार नेता बन जाएं तो फिर जनता इनसे मिलने और बात करने को तरसती है। हर छोटे–बड़े काम के लिए इनके दरबार के चक्कर, हाथ जोड़कर बड़े–बड़े लोग इनके सामने खड़े मिलेंगे। ऐसी इज्ज़त तो किसी प्रोफेशन में नहीं। आईएएस, आईपीएस ऑफिसर वैसे तो बड़े पद हैं पर इनके सामने वो भी कुछ नहीं, बस इनके आदेश के गुलाम। सही मायने में ये नीति निर्माता हैं और नियति निर्माता भी। इनकी दुश्मनी बड़ी भारी पड़ती है, एक बार तो शनि की वक्रदृष्टि से बच भी जाएं, पर इनकी वक्रदृष्टि से कोई नहीं बच सकता। इसलिए बस इनकी जय–जयकार करते रहिए और इनके शरणों और चरणों में नतमस्तक रहिए।

बड़े से बड़े लेखक, विचारक इनसे प्रेरणा लेकर इनकी

जीवनी लिखते हैं और कितने डॉक्टर, इंजीनियर बेनामी में अपनी जिंदगी काट देते हैं। फिर भी कोई माँ–बाप अपने बच्चों को नेता बनने की प्रेरणा नहीं देता। अब उचित समय है, जब माँ–बाप अपने बच्चों को इस क्षेत्र में अपना करियर बनाने को जागृत करें। आने वाले दिनों में बाकायदा कोचिंग और ग्रूमिंग सेंटर भी खुलेंगे जहाँ इस प्रोफेशन में सफल होने के गुण सिखाये जाएंगें।

कभी–कभी बरबस इस बात को सोचकर मन व्यथित होता है कि इस व्यंग्य लेख को भले ही हास्य के लिए लिखा जा रहा हो पर कितनी सच्चाई है इस बात में कि आप कितना भी पढ़े–लिखे हों, पर एक अनपढ़ नेता आपका भाग्यविधाता बन जाता है और आपको बस उसकी जी हुजूरी करनी है।

भारतीय संदर्भ में इसका मर्म और भी गहरा है, सच तो यह है कि आजकल बड़े–बड़े बुद्धिजीवी भी ऐसी बात करते हैं कि राजनीति को स्वच्छ करना है तो अच्छे लोगों को राजनीति में आना होगा। फिर भी हम अपने बच्चों को नेता बनने की प्रेरणा नहीं देते। तो साहब कोटा की कोचिंग, नीट, यूजीसी, यूपीएससी की तैयारी को छोड़िए और बस दम लगाएं, बच्चों को नेता बनाने में, यही समय की मांग है।

किसी सड़क छाप नेता के शब्दों में :–

कबीरा जब हम नेता हुए, अपनी बल्ले–बल्ले ।
धन वैभव सब क़दमों में, पड़े रहो निठल्ले ।।

हास्य

सोनपापड़ी

–संजय रावत
प्रबंधक (परिकल्प–एचएम), ऋषिकेश

दीपावली पर हमारे घरों में मिठाई बांटना परंपरा का हिस्सा है और मिठाइयों का नाम आते ही जहन में एक मिठाई का नाम आता है, वह है सोनपापड़ी। समाज में जितनी अवहेलना इसे उठानी पड़ती है शायद ही किसी दूसरी मिठाई को। सोचे तो ऐसा प्रतीत होता है, जैसे पुरातन काल में यह मिठाई किसी ऋषि के श्राप से ग्रसित हो। दीपावली में अगर सोनपापड़ी एक घर से चली तो कई बार तो घूमते–घूमते वापस पहुंच जाती है । कभी नई पैकिंग के साथ तो कभी वैसे ही । बचपन में हम सभी ने "ला ऑफ एनर्जी" तो पढ़ा ही है। "एनर्जी नाइदर बी क्रिएटेड, नॉर बी डिस्ट्रॉयड, इट ट्रांसफर फ्रॉम वन फॉर्म टू अनेदर"। यह कहावत इस मिठाई पर भी सटीक बैठती है और वह है, "लॉ ऑफ सोन पापड़ी"। इट इज नाइदर बी ईटन, नॉर बी डिस्ट्रॉयड, ट्रांसफर फ्रॉम वन पर्सन टू अनेदर"। पर अंत में जब 15 दिन बीत जाने के बाद यदा–कदा डिब्बा खुल ही जाए तो पहला पीस उठाया, फिर दूसरा और तीसरा उठाते ही सोनपापड़ी बोल पड़ी ! बस पगले अब रुलाएगा क्या ! अंत में यही कहना चाहता हूं कि जो आज तुम्हारा है, वह कल किसी और का था और कल किसी और का होगा। "क्या....सोनपापड़ी का डब्बा"।

अच्छे रिश्ते वह हैं जिनमें कल के झगड़े आज की बातचीत को न रोकते हों – **बी.के.शिवानी**

व्यंग्य

लेखक और लॉकडाउन

–श्री एस.के. चौहान
उप महाप्रबंधक (परिकल्प), ऋषिकेश

लेखक और लॉकडाउन का रिश्ता प्राचीन काल से है। यह न हो तो रचना की उत्पत्ति संभव नहीं। उत्कृष्ट साहित्य का सृजन हमेशा लॉकडाउन की स्थिति में ही होता है। अनेक साहित्यकार जेल में रहकर उत्कृष्ट एवं कालजयी रचनाएं कागज पर उतारने में सफल रहे हैं। दरअसल कोरोना कालखंड लेखकों एवं कवियों के लिए वरदान सरीखा है। प्रतिदिन नई–नई कविताओं, दोहों, गीतों व गजलों की उत्पत्ति हो रही है। कहानियां और उपन्यास लिखे जा रहे हैं। सुखानुभूति की गंगा बहने लगी है। लॉकडाउन में हिंदी साहित्य दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की कर रहा है। यह हिंदी साहित्य का स्वर्णिम कोरोना काल है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कोरोना काल में रचनात्मकता का भयावह विस्फोट हुआ है। कविता उछालें मार रही है। व्यंग्य बरस रहा है। दोहे, गजलें प्रस्फुटित हो रही हैं। रंग कर्म की दुनिया में 'क्वारंटीन थियेटर' फेस्टिवल का आगाज हो गया है। कविता फेसबुक पर ऑनलाइन है। सदी की कविता का पाठ होने लगा है जिसमें जीवित कवि अपना मुकाम तलाश रहे हैं। इस कोरोनाकाल में जिनके लिए रचनाकर्म संभव नहीं है वे अपना समय रसोईघर में नई–नई रेसिपी तैयार करने में लगा रहे हैं। जनवादी रचनाकार लाइव कबाब बनाते हुए अपनी वॉल पर दिखाई दे रहे हैं। अगले दिन वहां छोले–भटूरे की तस्वीर चस्पा होती है। यही सचमुच का रचनाकर्म है। मैं इन दिनों खामोश हूं। मित्र पूछ रहे हैं कि कुछ रचा कि नहीं। अब मैं इस कठिन दौर में क्या रचूं जबकि यूरोप के अस्तित्व पर ही नहीं पूरी दुनिया पर संकट है। बेरोजगारी बढ़ रही है। मैं धीरे से कहता हूं, कठिन दौर रचनात्मकता के लिए एकदम सटीक होता है। मैं तो कहता हूं कि आप इस कोरोना काल खंड का जमकर उपयोग कीजिए। कुछ लिखिए अन्यथा समय आपको क्षमा नहीं करेगा। मित्र प्रवचन के मूड में आ जाते हैं। उनके सुझाव पर मैं कागज कलम उठा लेता हूं। अचानक दिल्ली से ऋषिकेश आते हुए रास्ते में मजदूरों के झुंड मेरा पीछा करने लगते हैं। उनके सिर पर बोझा है। औरतों की गोद में दुधमुंहे बच्चे हैं। एक पैर से अशक्त एक आदमी मेरी ओर देखता है और मैं विचलित हो जाता हूं। मन में आई कविता का सिरा भी हाथ से छूट जाता है। भीतर की संवेदना ज्यादा देर ठहर नहीं पाती। "वह तोड़ती पत्थर" के कवि से माफी मांग लेते हैं और अंदर गजल का शोर कुलबुलाने लगता है, तभी उस बच्ची का मुरझाया चेहरा आंखों के सामने क्रंदन करने लगता है जो सौ मील पैदल चलते हुए थकान व भूख से दम तोड़ देती है। मेरी शायरी बेदम हो जाती है। एक गीत फूटने को होता है कि "आंचल में दूध" वाली कविता के शब्द मेरे सामने सिर के बल खड़े हो जाते हैं। भूख के कारण नवप्रसूता अपने नवजात शिशु को स्तनपान नहीं करा पा रही है। उसके आंचल से दूध लापता है और आंखों का पानी दुःखों के ताप से वाष्प में तब्दील हो रहा है। कवि ही मजदूर पर कविता लिखता है। किसान पर रचना करता है, बेघरों को शब्दों की छत सौंपता है। गरीब कभी अपने भोगे हुए यथार्थ को नहीं लिखता। कोरोना त्रासदी को वह अपनी रूखी त्वचा और बुझे मन पर दर्ज कर रहा है। क्या पढ़ेंगे उसे हम ? मित्र मेरी बात से खिन्न हो जाते हैं। क्या हम भी भूखों मरें? वह मुझसे कहते हैं। भूख में आदमी चिल्लाता ज्यादा है। हां खाली पेट ढोल की तरह बजता है। मैं धीरे से बुदबुदाता हूं। मित्र इसलिए मैं इस बेहद डरावने वाले समय में लिख नहीं सकता। मेरी बस्ती से थोड़ी दूर अभाव व दुर्दिनों का घना साया है जहां से उठती सांय–सांय की आवाज मेरी कलम को कुंद कर देती है।

लेख

ब्रह्मा जी की आयु कितनी है ?

–आल्हा सिंह
अपर महाप्रबंधक, पीपलकोटी

यह हमारे पुराणों में वर्णित रोचक जानकारियों में से एक है। भारतीय पद्धति पुराण आदि के अनुसार समय का माप कैसे किया जाता है। इस पर विचार करते हैं :–

» पहली बात यह कि पुराणों के अनुसार 360 दिनों का एक वर्ष होता है, 365 दिनों का नहीं। इसे हम मानव वर्ष कहते हैं।

» जब मनुष्यों का एक वर्ष पूरा होता है तब देवताओं और दैत्यों का एक दिन पूरा होता है। देवताओं और दैत्यों के दिन समान होते हैं पर उल्टे होते हैं। मतलब जब देवताओं का दिन होता है तो दैत्यों की रात्रि होती है। देवों और दैत्यों के एक वर्ष को दिव्य वर्ष कहा जाता है। इसी तरह पितरों का दिन एक पक्ष का शुक्ल पक्ष (15 मानव दिन) तथा एक रात कृष्ण पक्ष के बराबर होती है।

» मतलब 360 मानव वर्ष – 1 दिव्य वर्ष

» हमारा समय चार युगों मे बंटा है – सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग

» सतयुग का कुल कालखण्ड 4800 दिव्य वर्षों का होता है (4000 दिव्य वर्ष + 800 दिव्य वर्ष संध्या के) अर्थात 1728000 मानव वर्ष।

» त्रेता का कुल कालखण्ड 3600 दिव्य वर्षों का होता है (3000 दिव्य वर्ष + 600 दिव्य वर्ष संध्या के) अर्थात 1296000 मानव वर्ष।

» द्वापर का कुल कालखण्ड 2400 दिव्य वर्ष का होता है (2000 दिव्य वर्ष + 400 दिव्य वर्ष संध्या के) अर्थात 864000 मानव वर्ष।

» कलियुग का कुल कालखण्ड 1200 दिव्य वर्षों का होता है (1000 दिव्य वर्ष + 200 दिव्य वर्ष संध्या के) अर्थात 432000 मानव वर्ष।

» इन चारों को मिला दिया जाए तो उसे चतुर्युग या

सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो – **स्वामी शंकराचार्य**

महायुग कहते हैं। वह होता है कुल 12000 दिव्य वर्ष का, अर्थात 4320000 मानव वर्ष।

» संध्या का अर्थ है, दो युगों के मध्य का अंतराल जैसे दिन–रात के मध्य सायंकाल को संध्या कहा जाता है।

» 71 महायुगों का एक मन्वंतर होता है। जिसमें एक मनु शासन करते हैं, वह होता है 306720000 मानव वर्षों के बराबर। हर मन्वंतर में सप्तर्षि भी अलग–अलग होते हैं।

» 14 मन्वंतर या 1000 महायुगों का एक कल्प कहलाता है। एक कल्प ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ठीक उसी प्रकार एक कल्प की उनकी रात्रि होती है। एक कल्प 4320000000 अर्थात 4 अरब 32 करोड़ मानव वर्षों के बराबर होता है। ब्रह्मा जी के दिन में 14 मनु शासन करते हैं। अभी 7 वें वैवस्वत मन्वंतर का शासनकाल चल रहा है। अभी तक 6 मन्वंतर समाप्त हो गये हैं। अब 7 वें मन्वंतर की प्रथम चतुर्युगी का कलयुग चल रहा है। जिसमें 5132 वर्ष पूरे हो गये हैं। इस कलयुग का लगभग 4.26 लाख वर्ष से कुछ अधिक समय बचा है।

» इस तरह पृथ्वी की कुल आयु में से एक अरब पिचासी करोड़ तिरपन लाख इक्कीस हजार पांच सौ चौहत्तर वर्ष पूरे हो गये हैं तथा कुल सात मन्वंतर सत्तर चतुर्युगी से कुछ अधिक अर्थात दो अरब छियालीस करोड़ छियालीस लाख अठहत्तर हजार चार सौ छब्बीस वर्ष के लगभग बचे हैं।

» पुराणों के अनुसार एक कल्प के बाद पृथ्वी पर महाप्रलय होता है और उसका नाश हो जाता है। फिर किसी दूसरी आकाश गंगा में नई पृथ्वी बनती है और वहां पर जीवन चक्र शुरू होता है।

» आप गूगल पर सर्च कीजिए, पृथ्वी और हमारे सौर मण्डल की आयु भी नासा ने लगभग उतनी ही बताई है। लगभग 4.5 बिलियन वर्ष। है न आश्चर्यजनक ? भूगर्भ विज्ञान ने विभिन्न तकनीकों से पृथ्वी की आयु निकाली है, वह भी लगभग इतनी ही आती है। यह है न सनातनियों का धर्म बिल्कुल वैज्ञानिक होने का प्रमाण ?

» ब्रह्मा जी के एक वर्ष को ब्रह्म वर्ष कहा जाता है। एक ब्रह्म वर्ष 3110400000000 मानव वर्ष का होता है।

» जब ब्रह्मा जी के 50 वर्ष पूरे होते हैं तो उसे एक पराध्र कहा जाता है। इसकी मानव वर्षों में गणना की जाए तो वह होता है 155520000000000 मानव वर्ष।

» ब्रह्मा जी 100 वर्ष या 02 पराध्र पूरे होने को 01 महाकल्प कहा जाता है। वह होता है 311040000000000 (इकत्तीस नील दस खरब चालीस अरब) मानव वर्षों के बराबर।

» अपने 100 वर्ष पूरे करने पर ब्रह्मा जी की मृत्यु हो जाती है और ब्रह्मांड नष्ट हो जाता है। पुनः हिरण्य गर्भ की स्थापना होती है। हिरण्य गर्भ को ही ब्लैक होल कहते हैं।

सन्दर्भः–

1. भारतीय क्षत्रिय जाट इतिहास (लेखक वीरेन्द्र वाल्यान)

2. धर्म संसार डॉट काम (ब्लाग)

पहल
राजभाषा गृह-पत्रिका
जनवरी–अप्रैल 2021 (अंक 27)

लेख

योगश्चः चित्त-वृत्ति निरोधः

–(दिलवर सिंह पंवार)
उप अधिकारी, एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

'अ'युक्त' अर्थात बिखरा हुआ, अर्थात जो अस्त–व्यस्त हो या यह कह सकते हैं कि जिसकी ऊर्जा अव्यवस्थित हो। 'युक्त' अर्थात मेल अर्थात जो अपनी पूर्ण सामर्थ्य के साथ किसी लक्ष्य पर केंद्रित होता है। बस यही योग का आधार है – "जीव ब्रह्ममय ही है लेकिन जब अयुक्त होता है तो अपने को ब्रह्म से अलग समझने लगता है। यह भ्रम जब टूटता है तो योग होता है और अपने को परमात्मा का अंश स्वीकारता है।"

क्योंकि संसार में व्यवहार के प्रभाव से मन और बुद्धि में दोष आ जाते हैं और विशुद्ध आत्मा पर विकार का आवरण सा हो जाता है जो केवल भ्रम ही है। इस कारण जीव को आध्यात्मिक जगत में विकास के लिए साधना का सहारा लेना पड़ता है, क्योंकि यह आध्यात्मिक जगत तो अति पवित्रतम है। अतः साधना द्वारा पात्रता उपलब्ध की जाती है। यह साधना–मार्ग क्रमिक विकास का मार्ग है। महर्षि पतंजलि ने इस साधना–मार्ग की अष्टांग–योग के रूप में व्याख्या की है :–

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि

इस लेख में हम अष्टांग योग के प्रथम दो अंग **'यम' और 'नियम'** के बारे में जानने का प्रयास करेंगे :– **'यम'** जीवन में पालन योग्य वे पांच स्तंभ हैं जिनसे जीवन संतुलित, समृद्ध और सुखमय होता है। इन्हें जीवन में अनिवार्य रूप से धारण करना चाहिए। जो इस प्रकार हैं :–

(क) सत्य (ख) अहिंसा, (ग) अस्तेय (घ) ब्रह्मचर्य

(ङ) अपरिग्रह

जब जीव स्वयं को भगवान को पूर्ण समर्पित करता है तो ऐसी अवस्था में सत्य की अनुभूति करता है। सत्य नित्य अर्थात सदैव रहने वाला (अपरिवर्तनीय) है। संसार अनित्य अर्थात नष्ट होने वाला (परिवर्तनशील) है। मनुष्य इस निःस्सार संसार को ही सब कुछ मानने लगता है

और वह असत्य व अज्ञान के आवरण से ढक जाता है। असत्य अस्तित्वहीन होता है लेकिन प्रबल भासित होता है। हम सत्य को स्वीकार करें और अपने जीवन में धारण करें।

ब्रह्मचर्य अर्थात ब्रह्म जैसी चर्या (आचरण) तभी होता है जब मनुष्य सत्य का पालन करता है। सत्य ईश्वरीय गुण है जो अंतरतम में घटित होता है। सत्य मानव के अंतरतम में जो भाव उत्पन्न करता है वह प्रभु रूप ही होता है और जब यह अंदर का भाव आचरण में आता है तो ब्रह्मचर्य ही होता है। केवल कामवासना पर ब्रह्मचर्य को परिभाषित करना सार्थक नहीं है; हां यह ब्रह्मचर्य पालन में सहायक हो सकता है। योगी जानता है कि संसार में तो प्रभु की लीला ही हो रही है। अतः यह इस लीला के अनुकूल प्रभु कार्यों में सहयोग करता है। कोई भी कार्य करने से पहले स्वयं (आत्मा) से पूछे कि ऐसा करना अच्छा है या बुरा तो अंदर से स्वतः ही भावात्मक जवाब मिलेगा, जिसे शांत चित्त मनुष्य ही सुन और समझ पाते हैं। ब्रह्मचारी हमेशा धार्मिक ही होता है, अधर्म तो उससे हो ही नहीं सकता है।

अहिंसा– सत्य और ब्रह्मचर्य धारण करने वाले व्यक्ति की सोच और व्यवहार बड़ा ही कोमल व पवित्र होता

जीवन लंबा होने के बजाय महान होना चाहिए – **डॉ. बी.आर.अंबेडकर**

है, उसके द्वारा हिंसा हो ही नहीं सकती, वह हर समय दूसरों के कष्ट दूर करने के लिए तत्पर रहता है; कष्ट देता नहीं। अतः वह सदैव **अहिंसक** होता है।

अस्तेय (चोरी न करना) उपरोक्त व्यक्ति का स्वभाव बन जाता है। वह अपनी नेक कमाई से अर्जित धन को सेवा के कार्यों में लगाता है। दूसरों का हक छीनता नहीं है तथा शांतिपूर्ण जीवन जीता है।

अपरिग्रह (आवश्यकता से अधिक संपत्ति का संचय न करना) योगी का स्वभाव है क्योंकि वह जानता है कि सार तो ब्रह्म है, यह संसार नहीं। वह जानता है कि यह नश्वर पदार्थमय संसार संचय योग्य नहीं है। इसका आचरण न करने वाला व्यक्ति अंहकार और ममत्व की चपेट में आकर मायाजाल में फंस जाता है।

इस प्रकार, **यम** के दो भाग सत्य और ब्रह्मचर्य सकारात्मक है, इन्हें जीवन में अवश्य धारण करना चाहिए। शेष तीन भागों (अहिंसा, अस्तेय और अपरिग्रह) को आचरण में नहीं लाना पड़ता। ये तीनों स्वतः ही व्यक्ति के व्यवहार में परिलक्षित होते हैं।

महर्षि पतंजलि की शोध का द्वितीय पक्ष 'नियम' है। इन जीवन के मूल–सूत्रों के अनुपालन में हमें अनुकूलता के लिए नियमों पर आचरण करना होता है। तत्ववेत्ता मनीषियों ने 'नियमों' को भी पांच भागों में व्यवस्थित कर और भी सरल कर दिया। योगी कहते हैं कि जीवन को राम और कृष्ण की भांति अनुसरण करने योग्य बनाने के लिए पांच 'नियम' व्यवहार और स्वभाव में लाने ही होंगे : (अ) सोच (आ) संतोष (इ) तप (ई) स्वाध्याय (उ) ईश्वर प्राणिधान।

भारत भूमि में यह सुगंध उमड़ती है जो मानव जगत को आनंदित होने का संदेश देती है। यद्यपि यह संदेश व्यावहारिक जीवन में कुछ मुश्किल से लगेंगे; लेकिन दृढ़ संकल्प शक्ति के सहारे सरलता से धारण किए जा सकते हैं।

'सोच' आंतरिक व वाह्य दोनों ही प्रकार से होता है। आंतरिक सोच के अंतर्गत शरीर की तंत्र व्यवस्थाएं, मन (विचार), बुद्धि और अहंकार तक शोधन ऐसा होना चाहिए ताकि प्रभु कार्य में कोई व्यवधान ही महसूस न हो। वाह्य सोच के लिए तन की वाह्य शुद्धि तथा उत्तम आचार–विचार पर जोर दिया जाता है। आंतरिक सोच वाह्य की तुलना में अधिक प्रभावशाली, सुखकारी व दीर्घ स्थायित्व के साथ होती है, तो भी दोनों प्रकार से सोच होनी चाहिए। आंतरिक सोच के लिए मनीषी, मानव को इशारा देते हैं कि तेरा जीवन प्रभु के कारण ही तो है, इसीलिए तू प्रभु कार्य करने का विचार और निर्णय लेकर इस शरीर–साधन का भरपूर उपयोग कर।

'संतोष'– प्रभु की शरणागति होकर पूरा पुरुषार्थ कर और उस प्रयास के जो भी फल मिले सहर्ष स्वीकार करना तथा प्रसन्न रहना। यह प्रसन्नता स्वतः ही संतोषमय बना देती है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति समभाव में स्थित हो जाता है।

'तप'– कितना कल्याणकारी है 'तप' को साधना, कल्पना से परे है। लोक–कल्याण हेतु शरीर और मन से विपरीतता को सहन करना ही तप है। तपोनिष्ठ ही सबकी सेवा करते हुए समाज की व्यवस्था को संवारते हैं और कल्याण करते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए कुछ भी असंभव नहीं होता।

'स्वाध्याय'– वही कर सकता है जो अभ्यंतर में सम हो, तप से सधा हो तथा विशुद्ध भी हो। ऐसा व्यक्ति जीव व जगत का, जीवात्मा और परमात्मा का विवेकपूर्ण चिंतन करता है और तथ्य को समझकर अपने जीवन के रहस्य को जानकर जीवन के उद्देश्य को पूरा करता है।

यदि हम वास्तव में साधक हैं और शिष्य–भाव में स्थित हो जाते हैं तब हम समझ सकेंगे कि जो भी कुछ इस ब्रह्मांड में घटित हो रहा है; प्रभु की लीला ही तो है। अकर्तापन का भाव जाग्रत होता है; सेवा व भक्ति फलित होती है। तब समझ में आता है कि जड़ शरीर केवल उस अदृश्य शक्ति की सत्ता में ही गतिमान था अर्थात सभी कुछ प्रभु की उपस्थिति में ही हो रहा है। मेरा अस्तित्व भी केवल प्रभु के कारण है तो 'ईश्वर–प्राणिधान' सफल होता है। यह भाव–दशा है।

इस प्रकार, यदि यम और नियम के उपरोक्त पांचों आयाम सफलतापूर्वक जीवन में ढल जाएं तो बस ऐसा जीवन सभी को भाएगा। अतः हम सभी को जीवन मूल्यों का नियम–पूर्वक दृढ़ता से पालन कर जीवन को सार्थक बनाना चाहिए।

क्रमशः...

लेख

मैं और मेरी आदत

–नरेश सिंह
कनि. अधिकारी (हिंदी), ऋषिकेश

कहा जाता है कि बच्चा जन्म के समय एक स्वच्छ कच्ची व गीली मिट्टी के समान होता है तथा बच्चा तो निर्बोध, निरलेप व अच्छाई–बुराई से एकदम विरक्त होता है, जिसे चाहे जिस रूप में ढाल सकते हैं। किन्तु तमाम अध्ययनों व अनुभवों से यह पता चलता है कि बाल्यकाल से ही प्रत्येक बच्चे में आचार–व्यवहार व आदतें भिन्न–भिन्न होती हैं। अपने जन्म से प्राप्त आदतों के साथ वह धीरे–धीरे अपने माता–पिता, स्कूल, साथियों से कुछ अच्छा–बुरा सीखता हुआ बड़ा होता जाता है। उसके व्यवहार, परिश्रम करने के तरीके व अवसर को पहचानने की उसकी दृष्टि की गहराई के परिणामस्वरूप वह जीवन में सफलता व असफलता प्राप्त करता है। कहा जाता है कि कक्षा में पढ़ाने वाले अध्यापक सभी बच्चों को समान पुस्तकों से समान रूप से शिक्षा देते हैं परन्तु कोई 98%, 75%, 65%, 50% तथा कोई 33% के साथ सफल होते हैं वहीं दूसरी ओर उन्हीं हालातों में पढ़ने के बाद कुछ असफल होते हैं। एक ही माता–पिता के दो बच्चे अलग–अलग व्यवहार व जीवन में सफलता व असफलता प्राप्त करते हैं। इन सब स्थितियों व उनके परिणामों को देखते हुए मन में विचार उठता है कि सब कुछ समान होते हुए भी ऐसी कौन सी बात है जिसने बच्चों के व्यवहार व उनके जीवन में सफलता व असफलता के भिन्न–भिन्न स्तर निश्चित किए। हम देखते हैं कि कुछ बच्चे व लोग कार्य व तथ्य की गहराई में न जाकर केवल आधे–अधूरे, ज्ञान व परिश्रम से ही काम चलाना चाहते हैं। कम से कम मेहनत करना, हमेशा कंफर्ट जोन में रहना पसंद करते हैं तथा अपने ऐसे तरीके को छोड़ना व बदलना नहीं चाहते जो सबसे अधिक उनके लिए ही हानिकारक होते हैं। जबकि समय–समय पर उनके साथी व सहयोगी उन्हें इसमें

सुधार का परामर्श भी देते हैं किन्तु उन्हें अपना वहीं कंफर्ट जोन अच्छा लगने लगता है। इस कार्य व्यवहार व तरीके को आदत का नाम दिया जा सकता है।

हम अकसर कहते हैं कि मेरी यह पढ़ाई, कार्य व स्वास्थ्य की कमजोरी दूर नहीं होती। मैंने बहुत प्रयास कर लिए हैं। हम जब दोष स्वयं में न देखकर दूसरों में व आदत में देखने लगते हैं तब यह कार्य और भी कठिन हो जाता है। इसके दूसरे पहलू पर विचार कर देखें तो हमारे सामने ऐसे अनेकों उदाहरण हैं जब हमारे से भी खराब आदतों तथा परिस्थितियों को लोगों ने अपने दृढ संकल्प के द्वारा कुछ ही दिनों व क्षणों में छोड़ दिया तथा सुधार की ओर अग्रसर हुए। कहा भी जाता है कि खेत में अच्छी फसल उगानी पड़ती है जबकि खरपतवार खुद उग आते हैं, अच्छी आदत व स्वास्थ्य बनाना पड़ता है, पास होना पड़ता है फेल होने के लिए कुछ नहीं करना होता है। हमें हमेशा याद रखना होगा कि बुराई व बुरी आदत को हमने पकड़ रखा है, उसने नहीं, वह छूटने के लिए तैयार है। हम उस बुराई की जड़ न काटकर उसे रोज व्यवहार में लाकर उसे खाद पानी दे रहे हैं। हम उस बुराई को छोड़ने के लिए दृढ़ रूप से संकल्पित

अपने सपनों को सच होने से पहले आपको सपना देखना होगा – अब्दुल कलाम

नहीं होते तथा संकल्प करने पर आधे अधूरे मन से प्रयास करते हैं तो परिणाम भी वही आधा अधूरा होता है। जीवन के बारे में एक पुस्तक में लिखा था कि हमारे जीवन रूपी खेत का बहुत सारा हिस्सा व समय ऐसा होता है जहां कभी मेहनत व प्रयास का हल ही नहीं चला तब उससे अच्छी फसल की उम्मीद करना व्यर्थ ही है। मेरे विचार से अच्छी आदत एवं कार्य निष्पादन का श्रेष्ठ तरीका व उच्च जीवन आदर्श ही हैं, जो मनुष्य के जीवन में नए–नए सफलता के द्वार खोलते हैं, चाहे वह स्वयं, स्वास्थ्य, समय, कार्य तथा संस्थान प्रबंधन आदि किसी भी स्तर के हो। यह वह प्रदर्शन है जिसे अच्छे से प्रदर्शित करके एक कलाकार छोटे से बड़े स्तर के रोल निर्देशक से प्राप्त करने का पात्र बनता है। इसके बिना सफलता को यहां वहां ढूंढना मेरे विचार से व्यर्थ है।

हम अपनी बुरी आदतों को छोड़ने व अच्छी आदतों को अपनाने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ Self Punishment के तरीके अपनाकर सफलता के मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं। यह स्वयं के लिए सूक्ष्म दण्ड का तरीका आर्थिक व कुछ समय भोजन ग्रहण न करना व अधिक मेहनत करने का हो सकता है। जैसे मुझे सुबह पांच बजे उठकर घूमना व योग आसन आदि करना है। यदि रोज निर्धारित समय पर यह न करें तो आप 100, 500 रू. गरीबों को व मंदिर/मस्जिद जहां आपकी इच्छा हो, दान कर सकते हैं या कोई दूसरा तरीका भी अपना सकते हैं। इसको करने से आपको अपने पैसे बचाने के लिए अपनी आदत में सुधार करने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। धीरे–धीरे ही सही, हम सुखद मार्ग पर आगे बढ़ सकते हैं।

हास्य

भारत की सड़कें

–शीला देवी
उप अधिकारी (संविदा), ऋषिकेश

सावधान भैया जी ! ये भारत की सड़कें हैं, चलें जरा संभलकर। कीचड़ के साथ यहां पत्थर भी गिरते हैं, उछलकर। फिर भी किस्मत की बात है, अगर ज्यादा बुरी हुई तो आप खुद भी गिर सकते हैं। बड़ी ही अजीबोगरीब सड़के हैं, भारत की। गिरते ही पता चले जरूरत थी हिफाजत की। जी हां, यही भारत की सड़कें हैं जिन पर सरकार और सरकार चलाने वाले तारीफों के पुल बांधते हैं लेकिन सच में यहां किसी राहगीर को सड़कें पट्टी बंधवा देती है तो किसी को कफन ओढ़ा देती हैं। बीते कल की बात करें, एक नई नवेली दुल्हन अपने दूल्हे के साथ बाइक पर सवार होकर जा रही थी लेकिन यह दोनों सड़क ना देख पाए। प्रेमालाप, नई उभरती जवानी, गड्ढा आया और दोनों आज उसी सड़क पर जा गिरे धड़ाम से। सड़कों पर चलने का सीखे सलीका भूलकर भी ना करें ढिंका–चिका, ढिंका–चिका।

अब आप ही बताइए इतना तो पता होना चाहिए कि भारतीय सड़कों पर कैसे चला जाता है। लोग गलतियां करते हैं और दोष सड़कों को देते हैं पहली बार किसी भी एक–दो माह पुरानी सड़क को नई सड़क न समझे क्योंकि यह भी नई नवेली दुल्हन की तरह प्यारी लगती है और बदले में प्यार की बात करे तो पत्नी, प्रेमिका, मां–बाप सबका झूठ निकल सकता है पर इसका सच्चा ही निकलेगा। भारतीय सड़कें चार माह पुरानी चार सौ साल पुरानी बुढ़िया की शक्ल ले लेती है। बूढ़ा आदमी अपनी उम्र की वजह से कम, उसकी शक्ल देखकर ज्यादा कांपता है। वहीं समझदार समझ लेते हैं कि इसके साथ सेल्फी लेना जीवन की सबसे बड़ी मूर्खता होगी। हिंदुस्तान की सड़कों पर रहना है बचके, जरूरत से ज्यादा न निकले सज–धज के। जी हां, यहां आवारा मवेशी सड़कों के बीच में चलते हैं और वाहन फुटपाथ पर। पैदल चलने वालों के लिए न सड़कें हैं और न ही फुटपाथ !

पति–पत्नी के बीच का संबंध घनिष्ठ मित्रों के संबंध के समान होना चाहिए – **डॉ. बी.आर.अंबेडकर**

अध्यात्म

कलम सूत्र
(धम्मपद से संकलित)

–इन्द्रराम नेगी
प्रबंधक (हिंदी), टिहरी

मैं तथागत (शक्या मुनि) भाग्यवान हूं, जो बिना लाभप्रद से, अंहकार रहित इस संसार की भलाई के लिए इस युग में पैदा हुआ हूं, और मैं हजारों–लाखों जीवित प्राणियों को एक पवित्र, शुद्ध और बहुत दिव्य धर्म का उपदेश करता हूं। इस उपदेश की प्रकृति एक ही है और समान आकृति की है। यह उपदेश उद्धार जीवन, मुक्ति और मोक्ष के लिए है। मैं समान और एक ही आवाज के साथ, इस धर्म की व्याख्या करता हूं, ताकि यह आवाज निरंतर व समान रूप से आम लोगों तक एक समान पहुंच सके, क्योंकि इस धर्म में असमानता, विषमता, मोह और नफरत, घृणा के लिए जगह नहीं है। बुद्ध की अवस्था इस धर्म के संबंध में सभी के लिए एक समान है।

आप दूसरे धर्मावलंबी हो सकते हो। मुझमें चाहे वह जो कोई भी हो, कभी भी किसी के लिए अधिक प्राथमिकता या बैर नहीं है, यह वही सर्वव्यापक धर्म है, जो सभी प्राणियों को समझाता हूं। एक के लिए भी और दूसरे के लिए भी एक ही धर्म है। मैंने जो कहा है, वह सर्वोच्च सत्य है। मैं चाहता हूं मेरे लेख की जांच करने वाले ऑडिटर को भी पूरी तरह से मोक्ष की प्राप्ति हो। वे सभी भी इस उत्तम मार्ग का अनुसरण कर सकते हैं। यही मार्ग बुद्ध अवस्था को संचालित करता है। मैं चाहता हूं कि सभी ऑडिटर, जो मुझे सुनते हैं, वह भी बुद्ध बन जाए।

धम्मपदः मूल पाठ अर्थ सहित

यमक वग्ग (यमकवग्गो): धम्मपद

1. मन सभी धर्मों (प्रवर्तियों) का अगुआ है, मन ही प्रधान है, सभी धर्म मनोमय हैं। जब कोई व्यक्ति अपने मन को मैला करके कोई वाणी बोलता है, अथवा शरीर से कोई कर्म करता है, तब दुःख उसके पीछे ऐसे हो लेता है, जैसे गाड़ी के चक्के बैल के पैरो के पीछे–पीछे हो लेते हैं।
2. मन सभी धर्मों (प्रवर्तियों) का अगुआ हैं, मन ही प्रधान है, सभी धर्म मनोमय हैं। जब कोई व्यक्ति अपने मन को उजला रखकर कोई कर्म करता है, तब सुख उसके पीछे ऐसे हो लेता है जैसे कभी संग न छोड़ने वाली छाया संग–संग चलने लगती है।
3. 'मुझे कोसा, 'मुझे मारा, 'मुझे हराया', मुझे लूटा'– जो मन में ऐसी गांठें बांधे रहते हैं, उनका बैर शांत नहीं होता।
4. 'मुझे कोसा', 'मुझे मारा', 'मुझें हराया', मुझे लूटा'– जो मन में ऐसी गांठें नहीं बांधते हैं, उनका बैर शांत हो जाता है।
5. बैर से बैर शांत नहीं होते, बल्कि अबैर से शांत होते हैं। यही सनातन धर्म हैं।

मन एक भीरु शत्रु है जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है –प्रेमचंद

6. अनाड़ी लोग नहीं जानते कि यहां (संसार) से जाने वाले हैं। जो इसे जान लेते हैं उनके झगड़े शांत हो जाते हैं।

7. जो शुभ–शुभ को देखकर ही विहार करते हैं, काम भोग के जीवन रहते हैं, इंद्रियों से असंयमित हैं, भोजन की उचित मात्रा का ज्ञान नहीं रखते हैं, जो आलसी हैं, उद्योगहीन हैं उन्हें मार वैसे ही गिरा देती है जैसे वायु दुर्बल वृक्ष को।

8. अशुभ को अशुभ जान कर विहार करने वाले, इंद्रियों में सुसंयत, भोजन की मात्रा के जानकर, श्रद्धावान और उद्योगरत को मार उसी प्रकार नहीं डिगा सकती जैसे कि वायु शैल पर्वत को।

9. जिसने कषायों (चित्तमलों) का परित्याग नहीं किया है पर कषाय वस्त्र धारण किए हुए हैं, वह संयम और सत्य से परे है। वह कषाय वस्त्र (धारण करने) का अधिकारी नहीं है।

10. जिसने कषायों (चित्तमलों) को निकाल बाहर किया है, शीलों में प्रतिष्ठित है, संयम और सत्य से युक्त है, वह निःसंदेह कषाय वस्त्र (धारण करने) का अधिकारी है।

11. जो असार को सार और सार को असार समझते हैं, ऐसे गलत चिंतन में लगे हुए व्यक्तियों को सार प्राप्त नहीं होता।

12. सार को सार और असार को असार जान कर सम्यक चिंतन वाले व्यक्ति सार को प्राप्त कर लेते हैं।

13. जैसे बुरी तरह छेद हुए घर में वर्षा का पानी घुस जाता है, वैसे ही अभावित चित में राग घुस जाता है।

14. जैसे अच्छी तरह ढके हुए घर में वर्षा का पानी नहीं घुस पाता है, वैसे ही (शमथ और विपश्यना से) अच्छी तरह भावित चित में राग नहीं घुस पाता है।

15. यहां (इस लोक में) शोक करता है, मरणोपरांत (परलोक में) शोक करता है, पाप करने वाला (व्यक्ति) दोनों जगह शोक करता है। वह अपने कर्मो की मलिनता देखकर शोकापन्न होता है, संतापित होता है।

16. यहां (इस लोक में) प्रसन्न होता है, मरणोपरांत (परलोक में) प्रसन्न होता है, पुण्य किया हुआ व्यक्ति दोनों जगह प्रसन्न होता है। वह अपने कर्मो की शुद्धता (पुण्य कर्म संपति) देखकर मुदित होता है, प्रमुदित होता है।

17. यहां (इस लोक में) संतप्त होता है, प्राण छोड़कर (परलोक में) संतप्त होता है। पापकारी दोनों जगह संतप्त होता है।" मैंने पाप किया है"– इस (चिंतन) से संतप्त होता है (और) दुर्गति को प्राप्त होकर और भी (अधिक) संतप्त होता है।

18. यहां (इस लोक में) आनंदित होता है, प्राण छोड़कर (परलोक में) आनंदित होता है। पुण्यकारी दोनों जगह आनंदित होता है। "मैंने पुण्य किया है"– इस चिंतन से आनंदित होता है और सुगति को प्राप्त होने पर और भी (अधिक) आनंदित होता है।

19. धम्म ग्रंथों (त्रिपिटक) का कितना ही पाठ करें, लेकिन यदि प्रमाद के कारण मनुष्य उन धम्म ग्रंथों के अनुसार आचरण नहीं करता, तो दूसरों की गायें गिनने वाले ग्वालों की तरह श्रमणत्व का भागी नहीं होता।

20. धम्म ग्रंथो का भले ही थोड़ा पाठ करें, लेकिन यदि वह (व्यक्ति) धम्म के अनुकूल आचरण करने वाला होता है, तो राग, द्वेष और मोह को त्यागकर, संप्रज्ञानी बन, भली प्रकार विमुक्त चित्त होकर, इहलोक, अथवा परलोक में कुछ भी आसक्ति न करता हुआ श्रमण्त्व का भागी हो जाता है।

अध्यात्म

पूज्यवर हनुमान प्रसाद पोद्दार जी
(पुण्य तिथि पर विशेष)

–बी.पी.डोभाल
मुख्य अभिलेख अधिकारी, ऋषिकेश

ये देश संत–महात्माओं का देश रहा है, ये भारत भूमि संतों की उत्पत्ति का स्थल रही है। इन्हीं संत–महात्माओं की उत्पत्ति से ही इस देश को "देवभूमि" का नाम मिला है। लेकिन कालान्तर में कुछ संत–महात्मा घरानों के संत–महात्मा बन गए। उन्होंने अपने ऑडियो–वीडियो जारी करने शुरू कर दिए, टीवी आदि में अपना प्रचार–प्रसार करना शुरू कर दिया। लेकिन कुछ ही संतों और महात्माओं ने केवल मानवता की सेवा व उत्थान को अपना लक्ष्य बनाया व अपना संपूर्ण जीवन इसी कार्य में समर्पित कर दिया। उन्हीं पूज्य संतों में गीता प्रेस, गोरखपुर के संस्थापक स्वर्गीय हनुमान प्रसाद पोद्दार जी का नाम आता है, जिन्होंने सनातन धर्म की सेवा की एवं गीता, रामायण, महाभारत, वेद, पुराण, उपनिषद आदि हिन्दु ग्रंथों को घर–घर में पहुँचाने का उत्कृष्ट व अमूल्य कार्य किया। आज गीता प्रेस, गोरखपुर का नाम सभी सनातनी हिन्दुओं के लिए नया नहीं है। उसमें छपने वाली ऋषि मुनियों की कहानियों, जीवनियों, वृतांत, हनुमान चालीसा, आरती संग्रह आदि से सभी भली–भांति परिचित हैं।

राजस्थान के रतनगढ़ नामक नगर में लाला भीमराज अग्रवाल जी अपनी पत्नी रिखीबाई के साथ रहते थे। ये परिवार श्री हनुमान जी का बहुत बड़ा भक्त था। पंचाग के अनुसार विक्रम संवत के 1949 में आश्विन कृष्ण की प्रदोष के दिन (जो कि अंग्रेजी माह के अनुसार लगभग 12 अक्टूबर को पड़ता है) जब उनके घर में पुत्र की प्राप्ति हुई तो उन्होंने पुत्र का नाम हनुमान रख दिया। लेकिन मात्र 02 वर्ष की उम्र में

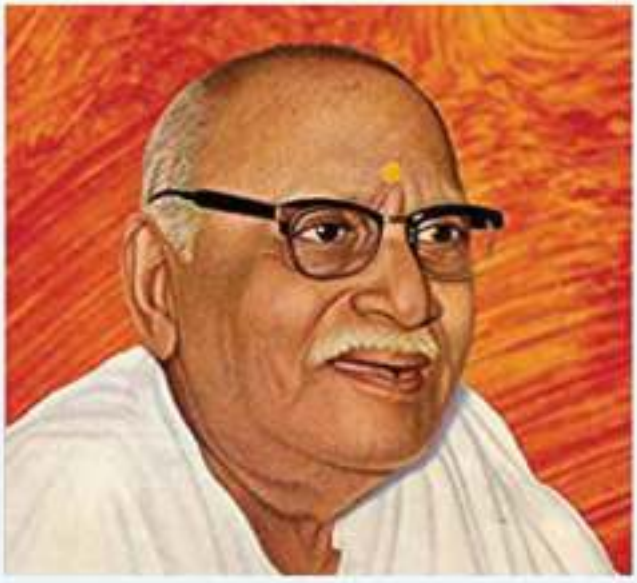

इनकी माताजी का निधन हो गया, तो इनकी परवरिश का जिम्मा इनकी दादी पर आ गया। दादी ने बचपन से ही इन्हें धार्मिक संस्कार दिए एवं महाभारत,गीता व ऋषि मुनियों की कहानियों को सुनाया व पढ़ाया, जिसका प्रभाव इन पर बचपन से ही पड़ गया था। भाई हनुमान प्रसाद पोद्दार जी के पिता का कारोबार कलकत्ता में था और वे असम में रहते थे। वही भाईजी की शिक्षा हुई, उन्ही दिनों जब देश गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था तो भाईजी अरविन्द घोष, देशबंधु चितरंजन दास, पं. झाबरमल शर्मा आदि स्वतंत्रता सेनानियों के संपर्क में आए तथा स्वतंत्रता के आंदोलन में कूद पड़े। सन् 1906 में कपड़ा बनाने में गाय की चर्बी की मिलावट का भाईजी ने विरोध किया व आंदोलन छेड़ दिया, उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं को अपनाने व विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने में जोर दिया व स्वदेशी खादी को अपनाया। जब लोकमान्य तिलक व गोपाल कृष्ण गोखले कलकत्ता आए तो भाईजी की मुलाकात इनसे हुई।

क्रोध ऐसी आंधी है जो विवेक को नष्ट कर देती है –अज्ञात

उन्होंने भी इनके कार्य को बहुत सराहा। भाईजी की गतिविधियों को देखकर अंग्रेजों ने भाईजी को देशद्रोह के केस में जेल में डाल दिया, आरोप लगाया कि वे सरकारी हथियारों व गोला बारूद की लूट की साजिश में लिप्त पाए गए। भाईजी जेल में हनुमान की पूजा व भजन का कार्य करते रहते थे।

भाईजी वीर सावरकर के द्वारा लिखे "1857 का स्वतंत्रता समर" ग्रन्थ से बहुत प्रभावित हुए व 1938 में वीर सावरकर जी से मिलने मुंबई चले गए। वहां वे प्रसिद्ध संगीतज्ञ विष्णु दिगंबर के संपर्क में आए व उनके संगीत के मुरीद हो गए। पोद्दार जी ने भक्ति गीत लिखे व उनको "पत्र–पुष्प" के नाम से प्रकाशित किया। मुंबई में ही अपने मौसेरे भाई श्री जयदयाल गोयनका जी के गीता पाठ से भाईजी बहुत प्रभावित हुए। लोगों का गीता के प्रति प्रेम श्रद्धा देखकर पोद्दार जी ने मन ही मन गीता को घर–घर तक पहुँचाने का संकल्प लिया। ये ही उनके जीवन का नया मोड़ साबित हुआ। बचपन में मिले संस्कार उनके मन में हिलोरे खाने लगे। भाईजी ने गीता में एक टीका लिखी व उसे कलकत्ता के वाणिक प्रेस में छपवाया, लेकिन उसमें बहुत प्रिंटिंग मिस्टेक थी, फिर भाईजी ने उसे ठीक करके पुनः छपवाया, लेकिन फिर भी बहुत प्रिंटिंग मिस्टेक हो गई। इसे देख उनके मन में बहुत ठेस पहुंची और उन्होंने निश्चय किया कि अब मै खुद की प्रिंटिंग प्रेस ही खोलूंगा। लेकिन प्रश्न था कि भूमि कहाँ से आए । तब उनके मित्र घनश्याम दास जालान ने जो कि गोरखपुर में ही व्यापार करते थे, ने पूरी सहायता की एवं मई,1922 में गोरखपुर गीता प्रेस की स्थापना हुई। 1926 में मारवाड़ी अग्रवाल समाज के महाधिवेशन में भाईजी की मुलाकात घनश्यामदास बिरला से हुई। बिरलाजी ने भाईजी द्वारा गीता से संबंधित कार्यों की बहुत सराहना की एवं सुझाव रखा कि आपको एक मासिक पत्रिका का भी प्रकाशन करना चाहिए जिससे आपकी व सनातन धर्म की आवाज घर–घर तक पहुंच सके। भाईजी ने बिरलाजी की इस बात को गंभीरता से लिया व "कल्याण" नामक पत्रिका का प्रकाशन करना शुरू किया। यह पत्रिका आज भी सनातन समाज की सेवा में अग्रसर है। कल्याण पत्रिका पहले मुंबई से प्रकाशित होती थी, लेकिन अगस्त, 1926 से यह पत्रिका गोरखपुर में गीता प्रेस में निरंतर छप रही है। कल्याण पत्रिका को और भी रोचक व ज्ञानवर्धक बनाने के लिए भाईजी ने इस पत्रिका के अलग–अलग विषयों पर विशेषांक भी छापे। भाईजी ने अपने जीवनकाल में गीता प्रेस गोरखपुर में 600 के लगभग पुस्तकें प्रकाशित की व 25 हजार से ज्यादा पृष्ठों का प्रकाशन किया। विशेषतः इस बात का भी ख्याल रखा कि साहित्य, पाठकों तक लागत मूल्य तक ही पहुंचे। भाईजी ने अपने जीवनकाल में प्रचार–प्रसार से सदैव दूरी बनाए रखी। उन्होंने ऐसे–ऐसे कार्य किए जिनकी केवल कल्पना मात्र ही की जा सकती है। बद्रीनाथ जी, जगन्नाथ जी, रामेश्वरम, द्वारका जी, कालडी श्रीरंगम आदि पवित्र तीर्थो में वेदभवन व विद्यालयों के निर्माण में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही।

भाईजी के जीवन काल में कई महत्वपूर्ण घटनाएं घटित हुई। एक सम्पन्न परिवार से होते हुए भी एवं ऊँची पहुंच वाले लोगों से सम्पर्क होने पर भी अभिमान उन्हें छुआ तक नहीं। वे सदैव एक साधारण व्यक्ति ही बने रहे व आम आदमी के लिए ही सोचते रहे। सनातन धर्म की सेवा हेतु सदा अग्रसर रहे। गीता प्रेस गोरखपुर से भाईजी ने कभी भी कोई आमदनी अपने परिवार के लिए नही ली बल्कि इस बात का दस्तावेज बनवाया कि मेरे परिवार का कोई भी सदस्य इसकी आमदनी का हिस्सेदार नही होगा। 22 मार्च, 1971 को उन्होंने अपना नश्वर शरीर त्याग दिया और अपने पीछे गीता प्रेस गोरखपुर नामक ऐसा केंद्र छोड़ गए जो आज भी मानवता की सेवा में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। देश की व सनातन धर्म की सेवा कर रहा है। आजकल गीता प्रेस गोरखपुर आर्थिक संकट से जूझ रहा है। सामाजिक संस्थाओं को व सरकार को जरूर इस विषय में मनन करना चाहिए।

स्वास्थ्य

ध्यान

–श्रीमती अनुपमा गोविल
पत्नी श्री राजीव गोविल,
अपर महाप्रबंधक (विद्युत गृह), टिहरी

आज हम इस प्रश्न की गहराई में उतरेंगे कि..... ध्यान क्या है? इस प्रश्न का उत्तर जानने के लिए हम पहले उन लोगों को देखेंगे जो ध्यान कर रहे हैं । दो प्रकार के लोग मुख्यतः ध्यान करते है:

1. वह लोग जिन्हें अपने तनाव को कम करना है। इतना कम कि जिससे उनका जीवन तनाव से प्रभावित न हो सके।
2. वह लोग जिन्हें मोक्ष पाना है। भारतीय परम्परा में ध्यान का उद्गम मोक्ष पाने के लिए ही हुआ था। यह ध्यान समाधि से पहले की सीढ़ी है।

इसके अतिरिक्त तीसरे प्रकार के लोग भी ध्यान करते हैं यह वे लोग हैं जो फैशन के तौर पर दूसरों की देखा–देखी ध्यान करते हैं।

प्रथम श्रेणी: इस श्रेणी के लोग जो तनाव को कम करने के लिए ध्यान करते हैं उन्हें जानने के लिए पहले जानेंगे कि तनाव क्या है ?

हमारा शरीर और मन दो तरह की स्थितियों में होता है। एक तो पूर्ण रूप से शांत और दूसरा दबाव में। जब शरीर और मन दबाव महसूस करता है तो दिमाग में कुछ रसायन प्रवाहित होते हैं। यह रसायन बहुत घातक होते हैं। इन रसायनों के प्रवाह से शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है। तो क्या ध्यान से तनाव कम हो सकता है ? हां, हो सकता है। कई वैज्ञानिक प्रयोगों में यह साबित किया जा चुका है। ध्यान करने से अनेक शारीरिक और मानसिक रोगों को नियंत्रित किया जा सकता है। इसके लिए अनेकों विधियां प्रचलित हैं।

ध्यान मुख्यतः तीन प्रकार से होता है:–

1. जिसमें आपको कोई मन्त्र उच्चारण कराया जाता है।
2. जिसमें आपको शरीर से बाहर किसी एक बिंदु पर एकाग्र कराया जाता है। जैसे कि दीपक की लौ आदि।
3. जिसमें शरीर के भीतर ही किसी एक बिंदु पर एकाग्र कराया जाता है जैसे सांसों पर या दिल की धड़कन आदि पर।

यह सब क्या हो रहा है ? हो यह रहा है कि जब आप इस तरह से किसी क्रिया में व्यस्त होते हैं तो आपके मन में कोई विचार नहीं उठते और जब विचार नहीं होते तो तनाव भी नहीं होता।

इस ध्यान का प्रभाव दिन भर पड़ता है, लेकिन ऐसे ध्यान का नकारात्मक पहलू भी है। वह यह है कि ऐसा ध्यान स्थायी इलाज नहीं है। इसे नित्य प्रति किया जाता है। यदि एक दिन नहीं कर पाये या निश्चित समय पर ना कर पाये तो तनाव उत्पन्न होता है कि आज कुछ छूट गया। अब जो ध्यान तनाव मुक्ति के लिए किया जा रहा था वही तनाव का कारण बन गया। वह लोग जो ध्यान को समझ ही नहीं पाए, उन्होंने ध्यान का स्वरूप ही विकृत कर दिया। ऐसे लोगों ने ही बीड़ा उठाया कि हम ध्यान को वैज्ञानिक आधार देंगे।

वास्तव में ध्यान जिस मोक्ष के लिए होता था उस मोक्ष को तो कोई नाप नहीं सकता। परमात्मा निराकार है, निर्विचार है तो उसे पकड़ा जा ही नहीं सकता। लेकिन एक वैज्ञानिक भी यह जानता है कि 'वो' है, परन्तु वैज्ञानिक खोज का आधार यहां से शुरू होता है कि 'मैं' तो हूं ही। यह 'मैं' 'हूं' का विचार ही अंहकार है तो जब विज्ञान अंहकार को नहीं पकड़ पाया तो विज्ञान यह कैसे जान पाएगा कि किसका अंहकार गिर गया ? कौन परमात्मा के साथ एक हो गया ? किसको मोक्ष अर्थात ध्यान की उच्चतम अवस्था प्राप्त हुई ?

द्वितीय श्रेणी: यह ध्यान की वह अवस्था है जिसमें परमात्मा के प्रति प्रतिपल श्रद्धा भाव बना रहता है। यह

अच्छे शब्दों के प्रयोग से बुरे लोगों का भी दिल जीता जा सकता है — भगवान बुद्ध

कर्ताभाव से मुक्त होने की अवस्था है। इसी अवस्था को अंहकार के गिरने की अवस्था कहते हैं । यह वह ध्यान है जहां कभी तनाव नहीं होता। इस अवस्था में ध्यान करने वाला ही खो जाता है। 'मैं' 'मैं' का शोर मचाने वाला जान जाता है कि यह "मैं" एक झूठ है।

ध्यान है जीवन, ध्यान है होश, ध्यान है प्रेम, ध्यान है विचार शून्यता। ऐसा ध्यान प्रतिपल की नवीनता से अवगत कराता है। ध्यान जीवन की सहज अवस्था है। चाहे दुःख आए, चाहें सुख आए, किसी भी अवस्था में उत्तेजित ना होना ही ध्यान है। आपका "मैं" आपका अहंकार, आपका जगत, आपका संसार, आपकी चेतना में आने वाला कोई भी व्यक्ति, वस्तु, विचार सब उस परछाई सा झूठ हैं जो असली चीज की होती तो हैं, पर सच नहीं होती। परछाई से पीछा छुड़ाकर सत्य में समाना ही सच्चा ध्यान हैं। यह वह अवस्था है जहां पूर्ण रूप से पूर्णता विद्यमान होती है।

"ऊं पूर्णमद : पूर्णमिदं पूर्णात पूर्ण मुदच्यते"

अर्थात पूर्ण में से निकाल देने पर भी पूर्ण ही प्राप्त होता है परमात्मा स्वरूप सदा सर्वथा पूर्ण है । "हर हर महादेव"

- कोरोना से बचाव के लिए सामाजिक दूरी रखना जरूरी है। व्यक्तिगत स्वच्छता और शारीरिक दूरी बनाए रखें तथा लॉकडाउन का ईमानदारी से पालन करें।
- हाथों को बार–बार धोएं और सफाई का पूरा ध्यान रखें।
- चेहरे और आंखों पर हाथों से टच न करें। यदि आपको चेहरे को बार–बार टच करने की आदत है तो इसे तुरंत बदल डालें।
- छींकते और खांसते समय अपनी नाक और मुंह को रूमाल या टिशू से ढक लें।
- उपयोग किए गए टिशू को उपयोग के तुरंत बाद बंद डिब्बे में फेंकें।
- अपने इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाएं जिसके लिए पौष्टिक आहार व योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करें।
- दिनभर में कम से कम एक बार कच्ची हल्दी दूध में पकाकर उसका सेवन करें।
- गुनगुना पानी पीने की आदत डालें।
- अपने तापमान और श्वसन लक्षणों की जांच नियमित रूप से करें।

हिंदी अनुभाग की ओर से..

हिंदी टाइपिंग के लिए यूनिकोड एकमात्र विकल्प

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि कम्प्यूटरों पर यूनिकोड प्रणाली के माध्यम से हिंदी में टाइप करना कैसे आसान हो गया है। यूनिकोड प्रणाली के अंतर्गत हिंदी में कार्य करना हो तो HI को एवं अंग्रेजी में कार्य करना हो तो ENG को कैसे स्विच किया जा सकता है । इस अंक में बता रहे हैं कि हिंदी में कार्य करने के लिए कौन–कौन से टूल्स उपलब्ध हैं।

ऐसे व्यक्ति जो हिंदी टाइपिंग नहीं जानते उनके लिए रोमन से देवनागरी में लिप्यंतरण हेतु टूल्स

गूगल इनपुट टूल

कम्प्यूटर पर विंडो एक्सपी ऑपरेटिंग सिस्टम के प्रचलन में आने के साथ ही यूनिकोड प्रणाली में टाइप करने की शुरूआत हुई। यूनिकोड प्रणाली के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को टाइप करने की सुविधा प्रदान करने के लिए अनेक टूल्स तैयार किए गए। जिनका प्रयोग कर वह व्यक्ति भी हिंदी में टाइप करने में सक्षम हुआ जो परंपरागत रूप से हिंदी में टाइप करना नहीं जानता था। इस प्रकार के टूल्स तैयार किए गए जिनमें रोमन में टाइप करने पर देवनागरी में लिप्यंतरण संभव हो गया। जैसे रोमन में aam टाइप करने पर देवनागरी का "आम" शब्द बन जाता है।

इन टूल्स का प्रयोग सरकारी कार्यालयों में बहुत अधिक प्रचलन में आया । परन्तु इनमें सबसे अधिक "गूगल इनपुट टूल" लोकप्रिय हुआ जिसके माध्यम से अनेक कार्यालयों के हिंदी टाइप न जानने वाले कर्मचारी भी टाइप कर रहे हैं। यह टूल गूगल सर्च बार में "गूगल इनपुट टूल फॉर विंडोज" डालने पर आसानी से डाउनलोड हो जाता था। इसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखते हुए राजभाषा विभाग द्वारा इसे एडॉप्ट कर लिया गया एवं अब यह टूल https://www.rajbhasha.net पर उपलब्ध है।

उपरोक्त हाईलाइट किए गए "गूगल हिंदी इनपुट ऑफलाइन फुल इंस्टालर कम्प्यूटर हेतु डाउनलोड करें" को क्लिक करने पर एक नया पेज खुलता है जिसमें 64 बिट एवं 32 बिट के कम्प्यूटरों के लिए अलग–अलग टूल डाउनलोड करने की व्यवस्था है ।

उत्कृष्टता एक निरंतर प्रक्रिया है और ये भाग्य का मोड़ नहीं है –अब्दुल कलाम

वांछित बिट के टूल को डाउनलोड कर अपने कम्प्यूटर में रन कराना होता है जिसके बाद इस टूल के माध्यम से HI को क्लिक कर सीधे रोमन से देवनागरी में टाइप कर सकते हैं ।

फोनेटिक की बोर्ड

उत्तरोत्तर विकास के क्रम में विंडोज 10 में गूगल इनपुट टूल के एक अच्छे विकल्प के तौर पर Phonetic keyboard इन्ब्यूल्ट है जिसे मात्र सक्रिय करने की आवश्यकता होती है इसके लिए Setting में जाकर Time and Language पर क्लिक करें। इसके बाद Language पर क्लिक करें। वहां preferred Languages में हिंदी को क्लिक करें फिर Option में जाकर Add a Keyboard पर क्लिक करें और Hindi Phonetic keyboard को इसमें जोड़ें। इसमें भी उसी प्रकार रोमन से देवनागरी में लिप्यंतरण किया जा सकता है जिस प्रकार गूगल इनपुट टूल से। साथ ही इसमें पूर्ण विराम, कोमा इत्यादि लगाने की व्यवस्था भी दी गई है और ऐसी अनेक विशेषताए दी गई हैं जो गूगल इनपुट टूल में भी मौजूद नहीं हैं।

यूनिकोड मंगल फोंट ट्रांसलिट्रेशन की-पैड

फोनेटिक की बोर्ड पर आधारित

स्वर											अनुस्वार	विसर्ग	पूर्ण विराम
अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ऋ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः	।
a	aa	i	ee	u	oo	ri	e	ai	o	au	an	ah	Shift + \
मात्राएं													
अ	ा	ि	ी	ु	ू	ृ	े	ै	ो	ौ	ं	ँ	ॉ
a	aa	i	ee	u	oo	ri	e	ai	o	au	m	mm	o
व्यंजन													
क	ख	ग	घ	ङ	त	थ	द	ध	न	ष	स	ह	क्ष
k	kh	g	gh	ng	t	th	da	dh	n	sh	s	h	Shift + x
च	छ	ज	झ	ञ	प	फ	ब	भ	म	त्र	श्र	ज्ञ	
ch	ch	j	jh	nya	p	ph	b	bh	m	tra	sra	gya	
ट	ठ	ड	ढ	ण	य	र	ल	व	श	टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड			
t	th	d	dh	na	y	ra	l	v	sh	कार्मिक हिंदी अनुभाग, ऋषिकेश			
नुक्ता युक्त व्यंजन													
ड़	ढ़	ढ़ँ	ॲ	ऍ	क्र	वृ	ट्र	ऑ	ख़	फ़	ज़	ह्र	ह्य
d	dh	dhn	na	a	kr	vri	tra	o	kha	f	z	hr	hya

शेष ई–टूल्स के बारे में जानकारी अगले अंक में.........................

राजभाषा विभाग द्वारा जारी राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

राजभाषा विभाग द्वारा जारी किया गया वर्ष 2021–22 का वार्षिक कार्यक्रम https://rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है । कार्यक्रम में विस्तार से वर्षभर के कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी गई है जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण मदें निम्नानुसार हैं :–

1. हिंदी बोले और लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को नीचे दिए अनुसार तीन क्षेत्रों में चिन्हित किया गया है: –

क–क्षेत्र	बिहार, छत्तीसगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली एवं अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र
ख–क्षेत्र	गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन एवं दीव और दादरा एवं नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र
ग–क्षेत्र	उपरोक्त क एवं ख में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य व संघ राज्य क्षेत्र

2. केंद्र सरकार के कार्यालय प्रत्येक तिमाही कार्यालय प्रमुख की अध्यक्षता में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन सुनिश्चित करें।
3. प्रत्येक छमाही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकों में कार्यालय प्रमुख उपस्थिति दर्ज करें।
4. कार्यालय के प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी को 02 वर्ष में 01 बार हिंदी कार्यशाला में भाग लेना अनिवार्य है। कार्यशाला का 2/3 समय प्रयोगात्मक रूप से उपयोग किया जाए।
5. प्रत्येक तिमाही की समाप्ति के 30 दिन के भीतर राजभाषा विभाग को सूचना प्रबंधन प्रणाली के माध्यम से हिंदी प्रगति की तिमाही रिपोर्ट ऑन–लाइन भरकर प्रेषित करना अपेक्षित है।
6. प्रत्येक छमाही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के शेड्यूल के अनुसार हिंदी प्रगति की अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्ट प्रेषित करना आवश्यक है।
7. विस्तृत जानकारी के लिए कृपया राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की वेबसाइट से वार्षिक कार्यक्रम डाउनलोड कर उसका अवलोकन करें।

वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं	कार्य विवरण	क्षेत्र	पत्राचार का अपेक्षित प्रतिशत	
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई–मेल सहित)	'क' क्षेत्र	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	100%
			2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	100%
			3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	65%
			4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	100%
		'ख' क्षेत्र	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	90%
			2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को	90%
			3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	55%
			4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	90%
		'ग' क्षेत्र	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को	55%
			2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र का	55%
			3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को	55%
			4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	55%

सत्य से बड़ा तो ईश्वर भी नहीं –महात्मा गांधी

अन्य मदें

क्र.सं	अन्य मदें	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की–बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात हिंदी ई–पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय ।	50%	50%	50%
10.	कम्प्यूटर सहित सभी प्रकार के इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो ।	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13. (i)	मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./ निदे./सं.स.द्व द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण) कार्यालय का प्रतिशत	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(ii)	मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
(iii)	विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें			
	(क) हिंदी सलाहकार समिति	वर्ष में 02 बैठकें		
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 02 बैठकें (प्रति छमाही 01 बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 04 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हो ।	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए ।		

कविता

हिंदी अपनाएं

आओ चलो हिंदी अपनाएं,
परदेसी छोड़ देसी गाएं,
आओ चलो हिंदी अपनाएं।

माम डैड से मां बाबा बन जाएं,
बर्गर पिज्जा छोड़, साग रोटी खाएं,
आओ चलो हिंदी अपनाएं।

पश्चिम भूल पूरब में रम जाएं,
नित नया सूरज फिर उगाएं,
आओ चलो हिंदी अपनाएं।

उतारे रंग ढंग विदेशी,
अपने संस्कार अपनाएं,
झुककर नमन अपनाएं,
आओ चलो हिंदी अपनाएं।

है अंधकार जहां,
जाके वहां कुछ ज्ञान का दीप जलाएं,
आओ चलो हिंदी अपनाएं।

रंग भेद सब छोड़े,
हिंदुस्तान अपनाएं,
हिंद को जयहिन्द बनाएं,
आओ चलो हिंदी अपनाएं।

– डा. नवनीत किरन
मुख्य चिकित्साधिकारी, टिहरी

कविता

मेरी मां

तुम मान हो सम्मान हो,
मेरे अन्दर की जान हो,
तुम मम्मी, तुम खाला,
तुम ही तो माँ हो,

तुम ममता करूणा की छाँव हो,
तुम प्रत्यक्ष हो अप्रत्यक्ष हो,
तुम ही सबसे स्वच्छ हो,
तुम निस्वार्थ सेवा में दक्ष हो,

तुम ही निश्चय हो तुम ही विश्वास हो,
तुम ही जीवन में भरती आस हो,
तुम एक रोशन सवेरा हो,
दूर करती जीवन का अंधेरा हो,
तुम्हारे आँचल में बसेरा हो,

जीवन में एक उज्ज्वल सवेरा हो,
सिर पर तुम्हारा हाथ हो,
जीवन के उतार–चढ़ाव में
तुम्हारा स्नेहिल आशीर्वाद हो।

– नलिनी कांत ओझा
जी एंड जी विभाग, ऋषिकेश

सुविचार

जो लोग श्रेष्ठ पुरुष के शब्दों, बातों, सलाह, मंत्रों का गलत अर्थ निकालते हैं, उनको सफाई देने में अपना बहुमूल्य समय बर्बाद नहीं करना चाहिए।

– संकलनः विष्णु भूषण मिश्रा
उप अधिकारी (कार्या.प्रशा.),ऋषिकेश

कविता

हे मर्यादा पुरुषोत्तम राम

सरयू तट पर बसी अयोध्या करती है तुम्हें प्रणाम, हे राम
पांच सदी के बाद दिया, इंसानों ने तुझे इंसाफ, हे राम
पांच अगस्त सन् बीस–बीस को, देकर तुझे विश्राम, हे राम
पुरुषों में थे श्रेष्ठ पुरुष तुम, मर्यादा का नाम तुम्हीं, हे राम
कई लुटेरे आए, मंदिर क्षति–आघात पहुंचाकर चले गए, हे राम
परन्तु अमिट छवि युगों–युगों से अडिग रहे तुम, हे राम
सरयू तट पर बसी....

एक नया शिगूफा भी ये आया, आपका जन्म नेपाल में बतलाया,
और संस्कृति नाशक दल ने ये बोला, राम–सेतु तो है झूठ का बबेला,
नासा ने जब सिद्ध किया ये तब, संस्कृति नाशकों को समझ ये आया,
अष्ट चक्र नौ द्वारों वाली न्यारी अयोध्या, देवो को भी भायी अयोध्या,
इस नगरी की यश पताका–कीर्ति फहराने वाले, तुम्हीं तो हो, हे राम
सरयू तट पर बसी....

सब्बल लिए कई सिब्बल देखे, न्याय की नींव खोदते देखे,
कहीं वकील सिंघवी सरीखे, धन बल से सब दौड़ते देखे,
कभी बहुत ज्ञानी थरूर सरीके, भद्दी टिप्पणी करते देखे,
करोड़ों हिन्दुओं का त्याग, बलिदान, संकल्प, प्राण तुम्ही से, हे राम
पांच अगस्त सन् बीस बीस को न्याय तुम्हीं से हैं, हे राम
सरयू तट पर बसी...

राम अलौकिक युगनायक के, दुष्ट दलन हित सुखदायक के,
राम प्रतीक वैदिक दर्शन के, कुलश्रेष्ठ युग परिवर्तन के,
समता के थे राम प्रणेता, दीन–हीन ममता के सुचेता,
मानवता के तुम उदारक, दानवता के तुम संघारक,
राम जन्म भूमि केवल मंदिर नहीं, नव भारत का निर्माण है, हे राम
सरयू तट पर बसी...

राम भारत की संस्कृति और भारत माँ के प्राण है,
झूठा नही राम का नाम, राम तो मर्यादा पुरुषोत्तम राम है,
जो उनको झूठा काल्पनिक कहे, वो मानवता पर कलंक है,
आर्य जगत की आशाओं का, अयोध्या इक अभिराम धाम है,
पांच अगस्त सन् बीस–बीस को, मने दीवाली ये करते आह्वान हैं
सरयू तट पर बसी ...

– बी पी डोभाल
मुख्य अभिलेख अधिकारी, ऋषिकेश

कविता

चुनौती महामारी की

महाविनाशक अति प्रचण्ड,
है प्रबल शत्रु ये अति उद्दण्ड,
ये अनुनय विनय नहीं माने,
क्षमा दया ये क्या जाने।

अति व्यस्त थे नगर महान,
महामारी से हुए लहूलुहान,
व्याधि विकट विकराल हुई,
हुई गलियां सड़के सुनसान।

बैण्ड–बाजों का शोर नहीं,
उत्सव यात्रा पर जोर नहीं,
ये कैसी नीरवता छाई,
जहां खुशियों की कोई डोर नहीं ।

विपदा की काली घटा छाई,
दृश्य हृदय विदारक दुखदाई,
जन–जन बेहाल से थके–थके,
प्रतिशोधक की सब राह तकें।

जब संकट का तम गहराता,
जन विकल निःसहाय हो जाता,
तब–तब विज्ञान का चमत्कार,
उद्धारक बनकर आ जाता ।

मानव की यही विजय गाथा,
हर संकट पार ये कर जाता,
कठिन चुनौती भी पौरूष से,
सुन्दर अवसर में ढल जाता।

– चंद्रदेव प्रसाद
वरि. अभियंता (आई.टी.), ऋषिकेश

कविता

पॉलीथीन

'खाली हाथ आये थे खाली हाथ जाना है'
यही बात दिमाग पर हावी हो गई,
घर से खाली हाथ निकलने की आदत हो गई,
और दुकान से पॉलीथीन थैली मांगना मजबूरी हो गई।
कपड़े–कागज थैलों को इस कदर कहा अलविदा,
कि सब प्लास्टिक पर हो गए फिदा।
कुल्हड़ दही से खटास आती है,
थैली बंद दही में मिठास लगती है,
अब पॉलीथीन थैले बहुत सुहाते हैं
ये अलग बात है कि
पॉलीथीन जिंदा रहती है, उसे लेने वाले मर जाते हैं।
पहली–आखिरी रोटी रखी है पॉलीथीन में बंदकर,
और वो जाती है गाय–कुत्ते की मौत बनकर,
इंसान जानता है पर मौन है आंख बंदकर ।
कानून भी लगते हैं बेचने वालों पर,
और बनाने वाले रखते हैं उसे जेब पर।
पॉलीथीन बंद तो ठीक है पर कौन सी
कुरकुरे, नमकीन, बिस्कुट, दूध, आटा, चावल
मैगी, सर्फ, रिफाइंड ..... इसमें कौन सी ?
संभल जा अब तो इंसान,
न फैला इस जहर को बेच अपना ईमान,
तेरी सांसों में भी तो यही जहर है।
सिंथेटिक पालीमर गंगा में मिल गया,
पितरों की मुक्ति का द्वार भी बंद हो गया।
छीन रहा है जीवन हमारा,
ये प्लास्टिक हत्यारा,
इससे पहले कि तू अपनों को कंधा दे,
आओ मिलकर पॉलीथीन को मात दें
पृथ्वी को फिर से ताजी सांस दें।

– रश्मि बडोनी
उप प्रबंधक(आई.टी.), ऋषिकेश

मनुष्य का पतन कार्य की अधिकता से नहीं वरन कार्य की अनियमितता से होता है **–अज्ञात**

कविता

कोरोनाकाल

इक नन्हा सा विषाणु विदेश में पैदा हुआ था दिसंबर में,
हाहाकार मचा कर रखा है जिसने पूरे ब्रह्मांड की सरजमीं पे ।
हर ओर तांडव करता दिख रहा है यह,
जिसका अब तक कोई न निकाल पाया है तोड़।
सारा विश्व जुटा है इसे हराने में,
कोशिश कर रहा है वैक्सिन बनाने में।
पूरी मानव जाति इस समय जी रही है इक खौफ में,
क्योंकि कब कहा हमला हो जाए इस दुश्मन से ।
हर ओर आंकड़ों का गणित है छाया,
आज कितने नए आए, कितने ठीक हुए और कितने परलोक गए।
सारी दुनिया ठहर सी गई है,
सारे और की हलचल स्थगित सी हो गयी है।
हर कोई मुंह पर पटबंध के साथ जी रहा है,
बार–बार हाथ साबुन से धो और सेनिटाईज कर रहा है ।
मेल मिलाप अब दूरियों मे बदल गए है,
अपने ही अपनों से दूर होने लगे हैं ।
बच्चों की पाठशाला बंद हो चली है,
ऑनलाइन कक्षाओं के चलते आँखों पर ऐनक चढ़ी है
रोजगार, व्यापार सभी मंद हो चले है,
गरीबो को तो दो वक्त की रोटी के लाले पड़े है ।
ना जाने कब इसकी दवाई इजाद होगी,
और यह जिन्दगी फिर से पुरानी तरह दौड़ेगी ।
हे प्रभु अब तो तू रहम कर इस दुनिया पर,
और जल्द ही मुक्ति दे इस कोरोना के कहर से।

– विनय कुमार जैन
उप महाप्रबंधक (विधि एवं माध्यस्थम), ऋषिकेश

कविता

बेटी

हर माँ का प्रतिबिंब है बेटी, शीतल सम पुरवाई है !
बेटी है तो रुन्झुन पायल, बेटी से शहनाई है !
गुड़िया गुड्डे खेले है जिससे, चकला बेलन बर्तन है !
बिन बेटी वो हर घर सूना, मुरझाए मन से (दर्पण) है !
लाख सजा लो घर को अपने, त्योहारों और तीजों मे !
बिन बेटी रौनक ना कोई, लाखों की भी चीजों मे !
है रब की रहमत ये बेटी, बेटी से संसार है !
लाखों में किस्मत पाओ तो, मिलता ये उपहार है !

– अर्चना पाण्डेय,
सुपुत्री अनिल कुमार पाण्डेय
उप अधिकारी, एनसीआर कौशांबी

कविता

पत्थर

ये जो कहानी है, इस पत्थर की,
बड़ी ही रोचक है, हाँ माना ये पत्थर,
बड़ा बदसूरत है,
पर कहानी खूबसूरत है।
एक बार, इसे एक जौहरी ने उठाया,
रगड़–तराश कर, इसे खूब चमकाया,
कहते हैं पुरखे, यही कोहिनूर कहलाया ।
विशाल रहा, हिमालय बना,
मिट्टी हुआ, खेत खलिहान मिला,
जो नाराज किया, पूरा रेगिस्तान बना ।
फिर ये, एक बच्चे की नजर में आया,
उसने उठाया, लुढकाया, छुपाया, ठुकराया,
उस दिन पत्थर की कुछ समझ न आया ।
राजा को मिला, तो महल बना,
रंक को मिला, तो उसकी छत बना
क्या राजा क्या रंक, पत्थर पत्थर रहा।
फिर भू–वैज्ञानिक से जा टकराया,
काटा, घिसा, तनु खंड बनाया,
उजागर कर दी इसने, भूगर्भ की माया ।
एक बार ये, एक भक्त को मिला,
उसने खींची, इस पर तीन रेखा,
तब ये पत्थर शंकर बन बैठा ।
अब जो अहमि हाथ लगाया,
कोहिनूर, रेगिस्तान समझ न पाया,
ये पत्थर, एक भयंकर माया।

– के. सी. उनियाल
वरि. प्रबंधक (भू–विज्ञान), ऋषिकेश

कविता

एक कंजूस पति की पत्नी से गुहार

प्रिय मेरी बताओ, क्यों मेरा खर्चा कराती हो।
मंगा बीजें नई नित–नित, मेरी नींदें उड़ाती हो।।
रखे अंदर हैं जो तुमने, पुराने सूट और साड़ी,
पहन उनको मेरी जाना, गजब तुम सबपे ढ़ाती हो।
न सोने से जो कम लगते, न गम है जिनके खोने का,
वही सस्ते से आभूषण, नहीं तुम क्यों मंगाती हो।
बदन की तेरी खुशबू तो, गुलाबों से भी प्यारी है,
क्यों महंगे शैम्पू साबुन से, प्रिय तुम फिर नहाती हो।
बनी दुल्हन सजी तुम थी, प्रिय जिन कपड़ों गहनों में,
उन्हीं को पहन के अब तुम, कहीं भी क्यों न जाती हो।
हो जैसी भी प्रिय तुम तो, मुझे भाती हो वैसी ही,
भला फिर ब्यूटीपार्लर में, क्यों तुम पैसे लुटाती हो।
नजर लगती जमाने की, प्रिय धन पर भी,
तो फिर खर्चा बढ़ाकर क्यों, मेरा बी.पी. बढ़ाती हो।

– के. सी. उनियाल
वरि. प्रबंधक (भू–विज्ञान), ऋषिकेश

कविता

दफ्तर का बाबू

दफ्तर का एक बाबू मरा, सीधे नरक में जाकर गिरा,
न उसे कोई दुख हुआ, न ही वह घबराया,
खुशी से झूम कर चिल्लाया,
वाह–वाह क्या व्यवस्था है, क्या सुविधा है क्या शान है,
नरक के निर्माता तू कितना महान है।
आंखों में क्रोध लिए यमराज प्रकट होकर बोले,
नादान दुख और पीड़ा का यह,
कष्टकारी दलदल भी तुझे शानदार नजर आ रहा है,
बाबू ने कहा माफ करें यमराज,
आप शायद नहीं जानते कि,
बंदा सीधा हिंदुस्तान की जेल से आ रहा है।

– एस.पी. थपलियाल
उप अधिकारी, ऋषिकेश

क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात कहने के बजाए दूसरों के हृदय को ज्यादा दुखाता है **–मुंशी प्रेमचंद**

कविता

ईमान

चलो खुद से आज मुलाकात करें,
दूसरों की बहुत सुनी आज खुद से कुछ बात करें,
आजीवन सुनते कहते आए, जो सुननी थी सबको,
अब चलो कहे वो, जो कहनी थी हमको,
जीवन के समर पथ पर, मिले जीवन में सीख कई,
तकलीफें सही भले ही हमने, नहीं अपनाई रीत नई,
मूल्यों से समझौता कर लो, ऐसा कहा सभी ने,
तकलीफें दर्द मिलेंगी उन पर जो चुनी है राह तुमने,
कहा, राह वही चुनो जो लोग हैं अब तक चुनते आए,
कहो, करो वही जो सरकार को भाए,
ठोकर खाओगे, गिर जाओगे, लोग हसेंगे,
कहता था मान लो बात ताने कसेंगे,
पर अंतरात्मा की आवाज सुनना भी जरूरी थी,
संस्कारों फूलों से बंधा, यह मेरी मजबूरी थी,
घायल हुआ ठोकर खाई पर हिम्मत ना हारा,
मिला कुछ नेक दिलों का इस संघर्ष में सहारा,
कहते हैं हर एक रात की सुबह अंततः होती है,
होता अंत में वही जैसी नियति होती है,
सच के पथ पर कई अड़चनें कई परेशानी,
पर गिरता सम्हलता खड़ा देख हुई हैरानी,
है राह मुश्किल सच की, इसमें तपन बहुत है,
पर इसमें संतोष सुकून और जतन बहुत है
इस राह में लोगों की भीड़ भी कम है,
पर अपनों के साथ से आंखें मेरी नम है,
कुछ गुजर गया कुछ गुजर जाए, बस यही दुआ है रब से,
सच का साथ ना छोड़े कोई, यही इल्तजा सबसे,
दूसरों से ईमान की यूं तो चाह पर, अपनी नियत साफ नहीं,
खौफ था कि खुदा को भी ऐसी बेईमानी माफ नहीं,
जो लोग ईमान वाले है, जिंदगी में अक्सर रोते है,
पर यह भी सच है आखिर वह चैन से सोते है

–आशुतोष कुमार आनंद
प्रबंधक (कार्मिक–नीति), ऋषिकेश

कविता

कोरोनावायरस का कोहराम

दो हजार बीस में कोरोना से बना इतिहास तबाही का ।
दिन–रात कटी हैं यूं डर के, बस आलम है तनहाई का ।।

दिन कटे कैद में यूं कटती रातें भी है तनहाई में।
बंद रहे सब घर–घर में, ना गाड़ी घोड़ा राहों में ।।

अपने भी पराए दिखाते हैं, एक दूजे से ना मिलते हैं ।
ये खौफ ये मंजर इतना है, पग–पग पर हर दम डरते हैं।।

यह चक्र रुका है जीवन का, अब रुकता यह संसार दिखा।
जिसको दिल से जुदा किया ना, अब जाके कोसों पार दिखा।।

तन मन में भय व्याप्त रहा, महामारी की परछाई में।
जीवन का कोलाहल डूबा, इस कोविड की तनहाई में।।

यह संकट की घड़ी डर भरी, ना सुख–दुख कोई बांट रहा।
देखे सब अपना ही जीवन दूजे को ना कोई झांक रहा।।

दुनिया के सब देशों में सांसे रुकती लाशें उठती।
भय में डूबे बीमारी के, डर–डर के है रातें कटती।।

ना दौलत शोहरत याद आए, ना गाड़ी बंगला मन भाए।
केवल जीने की चाहत पे, डर कोरोना का बरपाए।।

समतुल्य सभी को कर डाला, अद्भुत है कुदरत खेल तेरा।
अमीरी गरीबी ऊंचा–नीचा सब भूल गया तेरा–मेरा।।

पग–पग पर मानस सहमा है, हर पल कोविड–19 से डरता है।
दिनचर्या ऐसी विचलित है, बस जीवन का भय लगता है।।

क्या बहुरेंगे दिन सुख वाले, सब आस लगाए बैठे हैं।
दो बूंद दवा की आने की, जब आस लगाए बैठे हैं।।

निजी रिश्ते भी बेगाने है, मिलते–जुलते परिवारों में।
क्या जी भर के मिल पाएंगे, एक–दूजे से गलियारों में।।

न रेल चली न गाड़ी ठेले, अद्भुत जीवन कटा यहां।
एक–दूजे से दूरी करके, आपस में यह बंटा जहान।।

रख धैर्य भय को त्याग सदा, एहतियात बरतकर चलना है ।
लौटेंगे दिन वो कभी पुराने, इस जंग से ना तुझे डरना है।।

– मनोहर लाल डोभाल
वरि.कार्य.सचिव (विधि एवं माध्य.), ऋषिकेश

राजभाषा गतिविधियां एवं आयोजित कार्यक्रम

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश

कार्यशाला संचालन कक्ष में उप महाप्रबंधक(का.–स्था./हिंदी), श्री ईश्वरदत्त तिग्गा एवं वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 10 मार्च, 2021 को ई–3 ग्रेड के कार्यपालकों एवं कार्यपालक प्रशिक्षुओं के लिए हिंदी/यूनिकोड कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह आयोजन वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया । कार्यशाला की अध्यक्षता श्री ईश्वर दत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक– स्थापना/हिंदी) ने की। सर्वप्रथम कनि. अधिकारी, श्री नरेश सिंह ने हिंदी अनुभाग की ओर से कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में अध्यक्ष महोदय एवं कार्यशाला में प्रतिभागिता कर रहे सभी अधिकारियों का स्वागत किया। उन्होंने हिंदी अनुभाग के द्वारा किए जा रहे कार्यों के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी।

इस अवसर पर श्री ईश्वर दत्त तिग्गा ने अपने संबोधन में कहा कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के निर्देशानुसार संस्थान के सभी कर्मचारियों को 02 वर्ष में एक बार हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागिता करना अनिवार्य है। इसी क्रम में ई–3 ग्रेड के कार्यपालकों के लिए इस कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। हिंदी कार्यशाला में राजभाषा के लिए संविधान में किए गए प्रावधानों, भारत सरकार की राजभाषा नीति, अधिनियम एवं राजभाषा नियमों के बारे में जानकारी दी जाती है तथा इसके साथ ही कम्प्यूटर पर हिंदी के लिए विकसित किए गए टूल्स के प्रयोग संबंधी जानकारी भी दी जाती है। जिससे कर्मचारी इनका भरपूर प्रयोग अपने सरकारी कामकाज में करते हुए राजभाषा के कार्यान्वयन में योगदान दे सकें। उन्होंने कहा कि अधिकांश पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन शुरूआती स्तर पर इसी ग्रेड के अधिकारियों के द्वारा किया जाता है। इसलिए यह कार्यशाला इन अधिकारियों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

कार्यशाला में आंतरिक संकाय सदस्य वरि. हिंदी अधिकारी, श्री पंकज कुमार शर्मा ने अपने व्याख्यान में प्रतिभागियों को राजभाषा के संदर्भ में किए गए संवैधानिक प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम, 1963 एवं

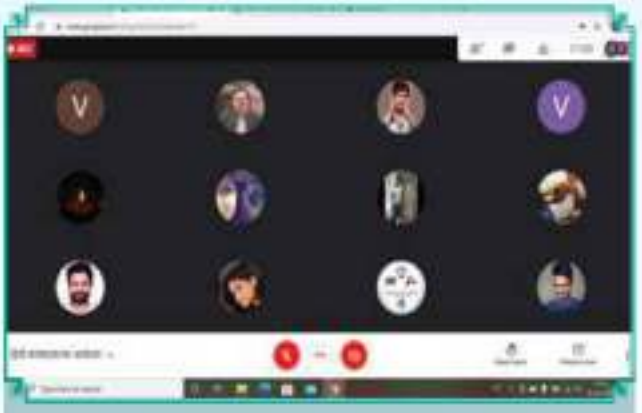

कार्यशाला में ऑनलाइन प्रतिभागिता करते अधिकारीगण

एक अच्छे अखबार के शब्द अपने आप बोल देते हैं –**बाल गंगाधर तिलक**

राजभाषा नियम, 1976 के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी। उन्होंने अनेक उदाहरणों के माध्यम से सरल हिंदी के प्रयोग से संबंधित जानकारी भी दी। उन्होंने कहा कि कंपनियों, संस्थानों एवं अन्य संगठनों, मशीनों, उपकरणों आदि के अंग्रेजी नामों का अनुवाद कर लिखना सही नहीं है। इनको सिर्फ देवनागरी में लिखना ही पर्याप्त होगा । कार्यशाला के दूसरे सत्र में श्री शर्मा ने कम्प्यूटरों पर हिंदी में कार्य करने से संबंधित प्रयोगात्मक रूप से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यूनिकोड प्रणाली के आने के बाद अब सबके लिए हिंदी में कार्य करना आसान हो गया है। जो कर्मचारी हिंदी टाइपिंग जानते हैं वे उसी प्रकार टाइपिंग कार्य कर सकते हैं जिस प्रकार वे गैर–यूनिकोड फोंट में करते आ रहे थे और जो कर्मचारी हिंदी टाइपिंग नहीं जानते वे फोनेटिक की–बोर्ड के माध्यम से टाइपिंग कर सकते हैं। इसके साथ ही उन्होंने प्रतिभागियों को लैपटॉप पर वाइस टाइपिंग भी करके दिखाई तथा गूगल ड्राइव के माध्यम से मोबाइल से बोलकर टाइप करना भी प्रयोगात्मक रूप से करके दिखाया।

कार्यशाला में प्रतिभागिता कर रहे कार्यपालकों ने अपने फीडबैक में कार्यशाला में बताई गई बातों की सराहना की और कहा कि यह कार्यशाला उनके लिए काफी उपयोगी रही जिसका उपयोग वे अपने कार्यालय के कार्यों में करेंगे।

टिहरी यूनिट

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी में 28 एवं 29 जनवरी, 2021 को कर्मचारियों के लिए दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अपर महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन), श्री बी.के.सिंह का स्वागत पुस्तक भेंट कर किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ अपर महाप्रबंधक, (कार्मिक एवं प्रशासन), श्री बी.के.सिंह, प्रबंधक(हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी एवं अन्य सदस्यों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर अपर महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) ने राजभाषा के स्वरूप एवं महत्व पर बल देते हुए कहा कि हम सभी 'क' क्षेत्र में आते हैं इसलिए सुनिश्चित करें कि हम अपने समस्त कार्य हिंदी में ही करें। हमें अपने सभी कार्यालयीन कार्यों को शत–प्रतिशत हिंदी में संपन्न कर हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना चाहिए। उन्होंने हिंदी की तिमाही रिपोर्ट भरते समय धारा 3(3) का सही तरह से अनुपालन करने एवं रिपोर्ट सही तरह से भरने पर बल दिया। इसमें अंतर कार्यालय ज्ञापन को शामिल नहीं करने पर भी जोर दिया।

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यशाला का उद्घाटन करते अधिकारीगण

कार्यशाला में संकाय सदस्य, प्रबंधक (हिंदी), श्री इन्द्रराम नेगी ने उपस्थित प्रतिभागियों को हिंदी भाषा का वर्तमान स्वरूप एवं भविष्य, कार्यालयीन हिंदी के स्वरूप पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली व्याख्यान दिया तथा अपने अनुभवों से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया। श्री नेगी द्वारा कंप्यूटर व मोबाइल में हिंदी वॉइस टाइपिंग एवं कार्यालय में मानक शब्दावली एवं तकनीकी शब्दावली के प्रयोग पर सारगर्भित एवं प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण दिया गया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती नीरज सिंह, कनि. अधिकारी (हिंदी) द्वारा किया गया। इन कार्यशालाओं में टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी के 25 प्रतिभागियों ने प्रतिभागिता की।

कोटेश्वर यूनिट

कोटेश्वर यूनिट में कामगार श्रेणी के कर्मचारियों हेतु 10 फरवरी, 2021 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। हिंदी कार्यशाला का शुभारंभ श्री

दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यशाला का उद्घाटन करते अधिकारीगण

नेलसन लाकड़ा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। इस अवसर पर उप महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन) ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है जिस पर हमें गर्व होना चाहिए। हिंदी भाषा विदेशों में भी दिन–प्रतिदिन प्रचलित हो रही है। कोटेश्वर कार्यालय 'क' क्षेत्र के अंतर्गत आता है इसलिए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना विभागीय काम–काज शत–प्रतिशत हिंदी में ही करना चाहिए ताकि राजभाषा कार्यान्वयन के निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। हिंदी कार्यशाला में आंतरिक संकाय सदस्य श्री डी.एस रावत, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, कोटेश्वर ने अपने व्याख्यान में प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम, नियम एवं सरकारी प्रयोजन हेतु विभागीय पत्र, परिपत्र, नोटशीट, अंतर कार्यालय ज्ञापन एवं कार्यालय आदेश आदि की भाषा तथा उनका प्रयोग और प्रशासनिक शब्दावली के बारे में जानकारी देते हुए कार्यस्थल पर कार्य की प्रकृति के अनुसार हिंदी में कार्य करने को बढ़ाने के लिए अनेक टिप्स भी दिए।

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी

एनसीआर कार्यालय, कौशांबी में 18 जनवरी, 2021 को अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु विद्युत मंत्रालय के संयुक्त निदेशक(राजभाषा), श्री अमित प्रकाश को आमंत्रित किया गया था। सर्वप्रथम अपर महाप्रबंधक (कार्मिक/वाणिज्यिक), श्री एस.एम. सिद्दिकी ने श्री अमित प्रकाश का स्वागत पुष्प गुच्छ भेंटकर किया। श्री सिद्दिकी ने कहा कि यह कार्यशाला कार्यालय के कर्मचारियों के मध्य राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता एवं रूचि उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होगी। उन्होंने प्रतिभागियों को माननीय संसदीय राजभाषा समिति के 07 दिसंबर, 2020 को किए गए राजभाषा निरीक्षण के बारे में भी मुख्य–मुख्य बातों से अवगत कराया और बताया कि माननीय समिति द्वारा कार्यालय में राजभाषा के और बेहतर कार्यान्वयन के लिए क्या–क्या सुझाव दिए गए हैं। इस अवसर पर श्री अमित प्रकाश ने अपने व्याख्यान में राजभाषा नीति, अधिनियमों एवं नियमों की जानकारी दी और सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए किए जाने वाले छोटे–छोटे उपायों से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि पिछले एक दशक से सरकारी कार्यालयों में हालांकि राजभाषा हिंदी में कार्य करने में तेजी से वृद्धि हुई है परन्तु अभी और भी अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है। कार्यशाला के दौरान कोविड 19 के कारण सोशल डिस्टेंसिंग का पालन किया गया और सभी प्रतिभागियों के द्वारा मास्क का प्रयोग किया गया।

महान आत्माओं को हमेशा सामान्य मन से हिंसक विरोध का सामना करना पड़ता है – **अल्बर्ट आइंस्टीन**

कारपोरेट स्तरीय ''नोटिंग-ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता''का आयोजन

(ई–ऑफिस के माध्यम से)

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 12 मार्च, 2021 को कारपोरेट स्तरीय ''नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता'' का आयोजन किया गया।

ई–ऑफिस के माध्यम से नोटिंग–ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन

ई–ऑफिस में हिंदी में नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग करने के लिए अधिकारियों एवं कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें कारपोरेट कार्यालय के साथ–साथ निगम की सभी यूनिटों/कार्यालयों के कर्मचारियों ने प्रतिभागिता की। कर्मचारियों को 12 मार्च को पूर्वाह्न 11:00 बजे ई–ऑफिस के माध्यम से प्रश्न पत्र भेजा गया एवं ई–ऑफिस में ग्रीन नोटशीट के माध्यम से ही कर्मचारियों ने अपनी प्रविष्टियां प्रेषित की । प्रविष्टियों के प्राप्त होने की शीघ्रता, सामग्री की शुद्धता एवं कर्मचारियों के द्वारा प्रकट किए मूल विचारों को ध्यान में रखते हुए विजेताओं का निर्णय लिया गया।

प्रतियोगिता में ऋषिकेश कार्यालय के प्रबंधक (कार्मिक–नीति), श्री आशुतोष कुमार आनंद ने प्रथम, ऋषिकेश कार्यालय के ही उप महाप्रबंधक (अ.एवं प्र.नि. सचिवालय), श्री शिवराज चौहान ने द्वितीय, पीपलकोटी कार्यालय के उप महाप्रबंधक (का.एवं प्रशा.), श्री एस.के. शर्मा ने तृतीय पुरस्कार प्राप्त किया। ऋषिकेश कार्यालय के श्री अल अजहर, वरि. अभि. (परि.–सिविल) एवं टिहरी कार्यालय के श्री जे.पी.चमोली, उप प्रबंधक(बांध) ने प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

बैठक को संबोधित करते श्री विजय गोयल, निदेशक (कार्मिक)

कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश में 23 मार्च, 2021 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन निदेशक(कार्मिक), श्री विजय गोयल की अध्यक्षता में वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया। बैठक में कारपोरेट कार्यालय के विभागों/अनुभागों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि सम्मिलित हुए । बैठक में समिति के सदस्य सचिव, श्री पंकज कुमार शर्मा ने विभागों/अनुभागों से प्राप्त हुई हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा करते हुए तिमाही के दौरान कारपोरेट कार्यालय

के विभागों/अनुभागों एवं यूनिट/कार्यालयों में हिंदी में किए गए मूल पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन के प्रतिशत की स्थिति के संबंध में अवगत कराया। इसके साथ ही उन्होंने हिंदी अनुभाग द्वारा पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई अनुपालन कार्रवाई एवं भावी लक्ष्यों के बारे में भी जानकारी दी।

इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में राजभाषा संबंधी गतिविधियों एवं नराकास की गतिविधियों को सक्रियता से संचालित किए जाने पर हर्ष व्यक्त किया और उन्होंने सभी विभागों/अनुभागों के प्रमुखों को राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन के लक्ष्यों के अनुरूप विभागों/अनुभागों में हिंदी पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश ने जीता नराकास राजभाषा वैजयंती का प्रथम पुरस्कार

नराकास, हरिद्वार की 31वीं बैठक संपन्न

नराकास राजभाषा वैजयंती के प्रथम पुरस्कार की घोषणा

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, ऋषिकेश को वर्ष 2019–20 के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की श्रेणी में नराकास राजभाषा वैजयंती के प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार की घोषणा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार की 21 जनवरी, 2021 को आयोजित हुई 31 वीं अर्धवार्षिक बैठक में की गई। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरिद्वार देश की बड़ी नराकासों में से एक है जिसके सदस्य संस्थानों की संख्या 66 है। इस नराकास में रुड़की, हरिद्वार, ऋषिकेश एवं पौड़ी में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालय/विभाग/पीएसयू/संस्थान/बैंक आदि शामिल हैं।

समिति की 31वीं अर्धवार्षिक बैठक वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित की गई। जिसमें श्री विजय गोयल, निदेशक (कार्मिक) एवं अध्यक्ष नराकास तथा श्री अजय मलिक, उप निदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के साथ नराकास, हरिद्वार के सदस्य संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि तथा अनेक गणमान्य व्यक्ति ऑनलाइन जुड़े हुए थे।

बैठक का संचालन श्री पंकज कुमार शर्मा, वरि. हिंदी अधिकारी एवं सचिव, नराकास हरिद्वार ने किया। संचालन कक्ष में श्री ईश्वरदत्त तिग्गा, उप महाप्रबंधक (कार्मिक–स्थापना/हिंदी) एवं हिंदी अनुभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। अध्यक्ष महोदय से अनुमति प्राप्त कर बैठक का संचालन करते हुए समिति के सचिव श्री शर्मा ने सदस्य संस्थानों से प्राप्त हुई अर्धवार्षिक रिपोर्टों की समीक्षा की और पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर अनुवर्ती कार्रवाई एवं भावी कार्यलक्ष्यों तथा राजभाषा विभाग के निर्देशों/अनुदेशों से अवगत कराया।

इस अवसर पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के उप निदेशक (कार्यान्वयन), श्री अजय मलिक ने नराकास हरिद्वार के प्रयासों की सराहना करते हुए

कहा कि यह उनकी क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, गाजियाबाद में रहते हुए नराकास हरिद्वार के साथ आखिरी बैठक है एवं अब वे अपने मूल कैडर में वापिस जा रहे हैं उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान नराकास हरिद्वार से प्राप्त हुए सहयोग की सराहना की। चर्चा सत्र के दौरान अनेक संस्थानों के अधिकारियों ने श्री मलिक के सौम्य स्वभाव के साथ दृढ़ता के साथ राजभाषा कार्यान्वयन में मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए उनकी सराहना की।

बैठक में उपस्थित सदस्य संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि

समिति के अध्यक्ष श्री गोयल ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन एवं देश भर में इसके प्रचार–प्रसार में श्री मलिक जैसे व्यक्तियों की नितांत आवश्यकता है जो निस्वार्थ भाव से इस अभियान में जुटे हैं । उन्होंने श्री मलिक के सुखद भावी जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि मैं आशा करता हूं कि आगे भी श्री मलिक का सहयोग हम सबको प्राप्त होता रहेगा। उन्होंने नराकास वैजयंती योजना एवं ऑनलाइन आयोजित की गई हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं एवं ज्ञान प्रकाश पत्रिका के संपादक मंडल को अपनी शुभकामनाएं संप्रेषित की।

नराकास, टिहरी की अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, टिहरी की अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन दिनांक 23 दिसंबर, 2020 को किया गया। बैठक में समिति के माननीय अध्यक्ष श्री वी.के.बडोनी, कार्यपालक निदेशक टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, टिहरी, श्री अजय मलिक, उपनिदेशक (कार्यान्वयन), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्री यू.के. सक्सेना, महाप्रबंधक (परियोजना), कोटेश्वर, श्री बी.के.सिंह, अपर महाप्रबंधक (कार्मिक एवं प्रशासन), टिहरी तथा नराकास के सदस्य संस्थानों के प्रमुख एवं प्रतिनिधि ऑनलाइन वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जुड़े। बैठक में नराकास, टिहरी के सचिव श्री इन्द्र राम नेगी, प्रबंधक (हिंदी) ने सदस्य संस्थानों से प्राप्त हुई 30 सितंबर, 2020 को समाप्त छमाही की रिपोर्टो की समीक्षा की तथा पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों और अनुपालन कार्रवाई के बारे में अवगत कराया।

समिति के अध्यक्ष श्री वी.के.बडोनी ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने हमें जो दायित्व सौंपा है, उसे हम अपने स्तर से पूरा करने का हरसंभव प्रयास कर रहे हैं जिसमें हमें सभी सदस्य संस्थानों का सहयोग भी प्राप्त हो रहा है। विभिन्न प्रकार की हिंदी प्रतियोगिताओं एवं कार्यशालाओं को सुचारू रूप से कार्यान्वित करने हेतु हम हमेशा तत्पर हैं। उन्होंने नराकास की बैठक में सदस्य संस्थानों की उपस्थिति को लेकर चिंता व्यक्त की और उन्होंने राजभाषा हिंदी के अनुपालन को मात्र खानापूर्ति की तरह न देखते हुए गंभीरता से अमल में लाने पर जोर दिया।

संपादक के नाम पाती

सेवा में, संपादक, राजभाषा गृह पत्रिका, 'पहल', महोदय, आपके पत्र संख्या 1709/टीएचडीसी/ऋ/सीपी/हिंदी/115 दिनांक 02.02.2021 के साथ आपकी पत्रिका 'पहल' प्राप्त हुई। बहुत–बहुत धन्यवाद ! पत्रिका बहुत ही आकर्षक और सुंदर कलेवर लिए है। पत्रिका के सभी लेख स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। यह राजभाषा हिंदी के विकास एवं उन्नयन की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगी, इस पत्रिका के प्रकाशन से जहां एक ओर टीएचडीसी के कार्मिकों की रचनाधर्मिता का विकास होगा वहीं दूसरी ओर वे राजभाषा हिंदी से भी जुड़ेंगे। आशा है कि यह पत्रिका अनवरत रूप से प्रकाशित होकर अपने उद्देश्य में सफल होगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन एवं संपादन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

डॉ. एम.आर सकलानी,
पूर्व उप निदेशक राजभाषा, आयकर विभाग एवं सदस्य सचिव नराकास, देहरादून
54/1 किशन नगर, देहरादून

सेवा में, श्री पंकज कुमार शर्मा, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी, टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड, ऋषिकेश, महोदय, आप द्वारा प्रकाशित एवं प्रेषित राजभाषा गृह पत्रिका "पहल" हमें प्राप्त हुई जिसके लिए आपको धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं रंगीन कलेवर बहुत ही आकर्षक है। श्री भुवनेश सिंह द्वारा रचित लेख 'उदय योजना–विद्युत क्षेत्र के सुधार में एक बड़ा कदम' काफी ज्ञानवर्धक है। इससे हमारे लोगों को भी बहुत सी जानकारियां मिलीं। ढेर सारी शुभकामनाओं सहित ।

आशुतोष पाण्डेय,
सहायक प्रबंधक (राजभाषा), दामोदर घाटी निगम, राजभाषा विभाग,
डीवीसी टावर्स, वीआईपी रोड, कोलकाता

सेवा में, श्री पंकज कुमार शर्मा, आदरणीय महोदय 'पहल' अंक–26 (सितंबर– दिसंबर, 2020) प्राप्त हुआ। श्री दीपक राज मेहता का आलेख 'सामाजिक बुराइयां', श्री दिलीप कुमार द्विवेदी का सांस्कृतिक आलेख 'बूढ़ी दीवाली पर्व' तथा सुश्री किरण डबराल की कविता 'एक किताब है जिंदगी' ने अत्यंत प्रभावित किया। श्री प्रशांत चौधरी का विशेष आलेख 'महात्मा गांधी के विचारों का सन् 2020 में महत्व' संग्रहणीय है। श्री नीलेंद्र बहुगुणा की कहानी 'मानवता' ने कहानी विधा के साहित्यिक मानदंडों देश–काल, वातावरण, कथोपकथन तथा संवाद इत्यादि शैली पर रचनात्मक कौशल आपके कुशल संपादकीय के दायित्व का परिचायक है। आशा है कि पत्रिका के आगामी अंक में इसी प्रकार की एक और रचना पढ़ने को मिलेगी। मैं स्वयं अपने कॉरपोरेशन की पत्रिका की 'ईसीआईएल गौरव' का संपादक हूं। अपनी पत्रिका के प्रकाशन में 'पहल' का संपादकीय कौशल सदैव मार्गदर्शक एवं प्रेरक रहा है। पत्रिका प्रकाशन में राजभाषा विभाग तथा संपादन समिति का परिश्रम स्पष्ट रूप से झलक रहा है। शुभकामनाओं सहित !

डॉ. राजनारायण अवस्थी,
वरिष्ठ अधिकारी (राजभाषा) एवं प्रभारी राजभाषा अनुभाग
इलेक्ट्रॉनिक्स कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड,

शक्ति शारीरिक क्षमता से नहीं, बल्कि यह अदम्य इच्छा शक्ति से आती है **–महात्मा गांधी**

हास-परिहास

मां गुस्से में अपने बेटे से –तू बाल क्यों नहीं कटवाता है ?
बेटा – क्या प्रोब्लम है मां, यह आजकल का फैशन है।
माँ गुस्से में – आग लगे तेरे फैशन को, लड़के वाले तेरी बहन को देखने आये थे और तुझे पसंद करके चले गए!!!

पप्पू– पापा मुझे डीजे खरीदकर दो।
पापा– नहीं दूंगा, तू लोगों को तंग करेगा।
पप्पू– नहीं पापा, मैं किसी को तंग नही करूंगा, जब सब सो जाएंगें तभी बजाया करूंगा !!

पार्टी में लड़की से हंस–हंस कर बातें कर रहे एक पति के पास पत्नी ने आकर कहा, चलिए, घर चलकर मैं आपके घाव पर मूव लगा देती हूं।
हसबेंड – पर मुझे घाव हुआ ही कहां है ?
वाइफ – अभी हम घर भी कहाँ पहुंचे हैं ??

मास्टर पप्पू से – एक तरफ पैसा, दूसरी तरफ अक्ल, तो तुम क्या चुनोगे ?
पप्पू – पैसा
मास्टर – गलत, मैं होता तो मैं अक्ल चुनता,
पप्पू – आप सही कह रहे हैं सर,
जिसके पास जिस चीज की कमी होती है, वो वही तो चुनेगा !!

एक बार क्लास में अध्यापक ने छात्रों से एक सवाल पूछा ।
अध्यापक – छात्रों, तुम सबमें से सबसे बहादुर कौन है ?
अध्यापक का सवाल सुनकर सारे छात्रों ने हाथ उठा दिए, यह देख टीचर ने एक और सवाल पूछा ।
अध्यापक– अच्छा बताओ, अगर तुम्हारे स्कूल के सामने कोई बम रख दे तो तुम क्या करोगे?
अध्यापक का सवाल सुनकर पप्पू ने हाथ उठाया और बोला ।
पप्पू – सर, एक–दो मिनट देखेंगे, अगर कोई ले जाता है तो ठीक है, नहीं तो स्टाफरूम में रख देंगे!

कल एक बाबा मिले, मैंने पूछा – कैसे हैं बाबाजी ?
बाबाजी बोले – हम तो साधू हैं बेटा, हमारा "राम" हमें जैसे रखते हैं, हम वैसे ही रहते हैं । तुम तो सुखी हो ना बच्चा..?
मैं बोला – हम तो संसारी लोग हैं बाबाजी, हमारी "सीता" हमें जैसे रखती है, हम वैसे ही रहते हैं..।

अध्यापक ने कहा – पप्पू कोई प्यार वाली शायरी सुनाओ ।
पप्पू – मोटा मरता मोटी पे, भूखा मरता रोटी पे, मास्टर जी की है दो बेटी और मै मरता हूँ छोटी पे!!
मास्टर जी अवाक रह गए !!

पप्पू जंगल में जा रहा था तभी एक सांप ने उसके पैर पर काट लिया।
पप्पू को गुस्सा आया और टांग आगे करके बोला– ले काट ले जितना काटना है काट ले।
सांप ने फिर तीन–चार बार काटा और थक कर बोला – अबे तू इंसान है या भूत?
पप्पू बोला – मैं तो इंसान ही हूं लेकिन साले मेरा ये पैर जिसमे तूने काटा ये नकली है।

अगर कोई दोस्त आपका दुख सुनकर उठ कर चला जाए तो उसे गद्दार नहीं समझना चाहिए, क्योंकि, हो सकता है वो डिस्पोजल ग्लास और दारु लाने गया हो

अध्यापक – कविता और निबंध में अंतर बताओ...!!!
पप्पू – गर्लफ्रेंड के मुंह से निकला एक शब्द भी कविता के समान होता है और पत्नी के मुंह से निकला एक ही शब्द निबंध के समान होता है

मेरी खूबियों का एक नमूना आपके सामने रखने जा रहा हूं, जरा गौर फरमाना, इतिहास के पेपर में जो प्रश्न नहीं आता था, उसको खाली छोड़ देता था, लेकिन गलत लिख कर, इतिहास के साथ कभी छेड़छाड़ नहीं की

असफलता एक चुनौती है,
स्वीकार करो,
क्या कमी रह गई,
देखो और सुधार करो,
जब तक न सफल हो,
नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम,
कुछ किए बिना ही जय जयकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

राष्ट्रकवि सोहनलाल द्विवेदी
(22 फरवरी, 1906 - 01 मार्च, 1988)

टीएचडीसी इंडिया लिमिटेड
THDC INDIA LIMITED
(भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार का संयुक्त उपक्रम)

गंगा भवन, प्रगतिपुरम, बाईपास रोड, ऋषिकेश–249201 (उत्तराखंड)
दूरभाष: 0135–2473614, ई–मेल: thdchindi@gmail.com वेबसाइट: http://www.thdc.co.in
पंकज कुमार शर्मा, वरि. हिंदी अधिकारी द्वारा टीएचडीसीआईएल के लिए प्रकाशित
(निःशुल्क आंतरिक वितरण के लिए)

Sharad